श्री सतीश चन्द्र मिश्राः अगर ये जवाब नहीं देते हैं, तो पता लग जाएगा कि इनकी क्या मंशा है। ...(व्यवधान)... इनकी मंशा यही है कि दलितों के साथ इसी तरीके से दुर्व्यवहार होता रहे। ...(व्यवधान)...

श्री सभापतिः भाई, सुनिए। ...(व्यवधान)... भाई, बैठ जाइए। ...(व्यवधान)... अच्छा, आपने अब अपनी बात कह ली। Now, Shri Ghulam Nabi Azad ... *(Interruptions)*...

श्री प्रभात झा (मध्य प्रदेश): सर, ...(व्यवधान)...

MR. CHAIRMAN: Silence please. ...*(Interruptions)*... प्रभात झा जी, बैठ जाइए। ...(व्यवधान)... बैठ जाइए, बैठ जाइए। ...(व्यवधान)... Please sit down. ...*(Interruptions)*... Shri Ghulam Nabi Azad ... *(Interruptions)*...

DISCUSSION ON THE PREVAILING SITUATION IN KASHMIR VALLEY

विपक्ष के नेता (श्री गुलाम नबी आज़ाद): सर, इससे पहले कि मैं कश्मीर के हालात पर चर्चा करूँ...

†**قائد حزب اختلاف (جناب غلام نبی آزاد)**: سر، اس سے پہلے کہ میں کشمیر کے حالات پر چرچہ کروں۔۔

MR. CHAIRMAN: That is the subject for discussion.

श्री गुलाम नबी आज़ादः हमारे सहयोगियों ने दलितों पर हो रहे अत्याचार के बारे में जो कुछ बताया है...

†**جناب غلام نبی آزاد**: ہمارے سہیوگیوں نے دلتوں پر ہو رہے اتیاچار کے بارے میں جو کچھ بتایا ہے۔۔۔

श्री सभापतिः देखिए, आप deviate मत होइए।

श्री गुलाम नबी आज़ादः उस पर भी अपना पूरा समर्थन देता हूँ। ...(व्यवधान)... माननीय चेयरमैन साहब, मैं आपका बहुत-बहुत शुक्रिया अदा करता हूँ कि आपने इस हाउस में जो यह रिवायत कायम की है कि वे क्वेश्चन ऑवर हमेशा चलेगा और क्वेश्चन ऑवर को कैंसल करके कोई दूसरी कार्यवाही नहीं करनी चाहिए, उस रिवायत से हटकर केवल हमारी पार्टी ही नहीं, बल्कि पूरी अपोजिशन की जो माँग थी कि आज के दिन क्वेश्चन ऑवर को छोड़कर कश्मीर के मुद्दे पर बहस होनी चाहिए, कश्मीर में जो हालात हैं, उन पर बहस होनी चाहिए, उसको आपने परमिट किया। इसके लिए मैं पूरे सदन की तरफ से और विपक्ष की तरफ से आपका शुक्रिया अदा करता हूँ।

मैं गृह मंत्री जी का बहुत-बहुत शुक्रिया अदा करता हूँ। हमारे पार्लियामेंटरी अफेयर्स मिनिस्टर तो इस बहस को आगे ले जाने के लिए टाल-मटोल कर रहे थे और शायद वे इंतजार कर रहे थे कि दो-

† Transliteration in Urdu script.

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

तीन दिन मे सेशन खत्म हो जाएगा, तो उसके साथ यह मसला भी दबेगा। लेकिन, मैं अपनी तरफ से और विपक्ष के साथियों की तरफ से आपको भी बहुत बधाई देता हूँ कि कल आप सदन में आए और कहा कि बहस बिल्कुल होगी और आज आप इसके लिए तैयार हैं।

सर, मुझे जहाँ तक याद है, ऐसा पहले कभी नहीं हुआ कि एक ही महीने के सेशन में इस पर चौथी दफा चर्चा हो रही है। इस पर 8 जुलाई, 2016 को शॉर्ट ड्यूरेशन डिस्कशन था, जिसका मैंने नोटिस दिया था और हमारे सभी साथियों ने उस पर बात की थी और इज़हार-ए-अफसोस किया था। उसके बाद 8 और 9 अगस्त को भी ज़ीरो ऑवर में इस पर चर्चा हुई, विपक्ष के सभी साथियों और लीडर्स ने इस पर चर्चा की और आज चौथी दफा इस पर चर्चा हो रही है। हम आपका शुक्रिया अदा करते हैं कि इस मुद्दे पर दिन भर चर्चा के लिए आपने हमें फिर मौका दिया। सर, इससे पहले इस हाउस में और दूसरे हाउस में भी कश्मीर के हालात को लेकर चर्चा हुई। हमारे दलित भाइयों को पिछले कुछ महीने से वही क़हर भुगतना पड़ रहा है, जो अक़ल्लियत के लोगों को पिछले दो सालों से भुगतना पड़ रहा है। उस पर भी दोनों सदनों में चर्चा हुई। चाहे कश्मीर का मुद्दा हो या दलितों का मुद्दा हो, इन दोनों मुद्दों पर इस हाउस में या उस हाउस में हमने यह माँग की थी वज़ीर-ए-आज़म, इस देश के प्राइम मिनिस्टर खुद आएँ। उनको कहीं बाहर से नहीं आना है, अमेरिका, ब्रिटेन या अफ्रीका से नहीं आना है। मैं बहुत खुश हुआ था जब वज़ीर-ए-आज़म पहली दफा इस पार्लियामेंट हाउस में आए थे शायद अपनी पार्टी की मीटिंग के लिए, तो उन्होंने इस सदन को सर नमन किया था कि यह दुनिया का सबसे बड़ा जम्हूरित का मंदिर है। उसके बाद बड़ी खुशी हुई कि वज़ीर-ए-आज़म हमेशा सुबह दस बजे अपने कमरे में, जो पार्लियामेंट का कमरा है, आते हैं, मैं रोज उनकी गाड़ियां देखता हूं और छः बजे तक बराबर बैठते हैं। मैं नहीं समझता कि कोई मिनिस्टर, कोई एम0पी0, चाहे रूलिंग पार्टी का हो या विपक्ष का हो, सुबर 10 बजे से या साढ़े दस बजे से शाम तक अपने कमरे में रहता हो, जैसे प्रधान मंत्री जी रहते हैं, लेकिन प्रधान मंत्री इतने नज़दीक होकर भी पार्लियामेंट से सबसे ज्यादा दूर हैं। उनके कमरे से लोक सभा के लिए कुछ सेकंड लगते हैं और उनके कमरे से राज्य सभा के लिए पौन मिनट या एक मिनट लगता है। तो एक मिनट की दूरी और कुछ सेकंड की जो दूरी है, मुझे लगता है कि वह कई हजार किलोमीटर की दूरियों से भी ज्यादा दूर है। हम यहां चर्चा करते हैं, मुझे बड़ा अच्छा लगा कि कल गृह मंत्री जी ने कहा कि मैं अपने कमरे में मीटिंग में था, लेकिन कश्मीर के मुद्दे पर यहां आपको खड़े होते देखा और बहस हो रही थी, तो मैं मीटिंग छोड़ कर आया कि क्या हो रहा है। तो यहां पर इस प्रकार प्राइम मिनिस्टर का रेस्पांस होता था, पं. जवाहर लाल नेहरू, इंदिरा गांधी जी, राजीव गांधी जी, डा0 मनमोहन सिंह जी और यही रेस्पांस अटल बिहारी वाजपेयी जी का भी होता था। अगर वे पार्लियामेंट में अपने कमरे में होते थे और अगर हाउस में कोई बहस तेज हो रही हो तो प्रधान मंत्री फौरन आते थे। लेकिन जब दलितों के बारे में चर्चा हुई तो हमने इस हाउस में वज़ीरे-ए-आज़म को नहीं देखा और दूसरे हाउस में भी नहीं देखा, बल्कि तेलंगाना से उनकी तकरीर सुनी कि वे दलितों को क्या कहना चाहते हैं या दलितों को जो लोग तंग करते हैं, उनके बारे में कहते देखा। सर, जैसा मैंने कहा कि इस हाउस में चौथी दफा हम चर्चा कर रहे हैं। हमने बार-बार कहा कि वज़ीर-ए-आज़म को ही आना चाहिए, लेकिन हमारे हिन्दुस्तान के वज़ीर-ए-आज़म ने मध्य प्रदेश से कश्मीर को एड्रेस किया, लोक सभा से एड्रेस नहीं किया, राज्य सभा से एड्रेस नहीं किया। मुझे नहीं मालूम कि मध्य प्रदेश

हिन्दुस्तान की राजधानी कब तब्दील हो गई, हिन्दुस्तान के केपिटल मध्य प्रदेश कब बन गया और पार्लियामेंट वहां कब से खुली है लोक सभा और राज्य सभा, जहां से वज़ीर-ए-आज़म इस देश के कश्मीर को एड्रेस करते हैं। ...**(व्यवधान)**...

श्री प्रभात झा (मध्य प्रदेश): चंद्रशेखर आज़ाद की जन्मस्थली थी वहां ...**(व्यवधान)**...

श्री सभापतिः प्लीज-प्लीज, बैठ जाइए-बैठ जाइए। ...**(व्यवधान)**... Please. ...*(Interruptions)*...Orderplease. ...*(Interruptions)*...Pleasedon'tinterrupt. ...*(Interruptions)*...Don't take up his time. ...*(Interruptions)*... Please continue.

श्री गुलाम नबी आज़ादः मैं मर्यादा भी समझता हूँ और मध्य प्रदेश कोई derogratory word नहीं है, वहां पार्लियामेंट या राजधानी खुलना कोई derogatory word नहीं है। मैं प्राइम मिनिस्टर की इज्जत भी करता हूं, बड़ी इज्जत से उनका नाम लेता हूं, लेकिन अगर शब्द भी आप नहीं सुनेंगे तो फिर यह पार्लियामेंट तो बंद करनी पड़ेगी। ...**(व्यवधान)**... मैंने कोई ऐसा शब्द नहीं कहा है, उस पर आपको आपत्ति होगी। ...**(व्यवधान)**... आप फिक्र मत करिए, वे अपने कमरे में दोनों सदनों की पूरी कार्यवाही सुनते हैं। आपको कोई फिक्र नहीं होनी चाहिए। इतना तो वे जरूर करते हैं। उनको सब मालूम है कि क्या हो रहा है। तो इस पर अफसोस होता है और जख्मों पर नमक छिड़कने की बात कल हुई, जब हम चौथी दफा इस हाउस में मांग कर रहे थे कि वज़ीर-ए-आज़म को, प्रधान मंत्री को यहां आना चाहिए। कल वे कहते हैं कि हमारे चीफ मिनिस्टर ने बताया कि कुछ बोलना चाहिए। उसका मतलब है कि चीफ मिनिस्टर ने बताया तो तब कुछ बोलेंगे! उसका मतलब हुआ कि हम जो सब अपोजिशन के लोग सदन में बोल रहे थे, इस सदन की कोई कीमत नहीं है! Opposition की कोई कीमत नहीं है, उनका चीफ मिनिस्टर कहेगा, तब वे बोलेंगे। इसका मतलब है कि अगर चीफ मिनिस्टर नहीं कहते तो आज भी वे नहीं बोलते। ये एक ही चीज़ के दो मतलब हैं। इतनी नाराज़गी भी क्या है? अगर अफ्रीका में कोई घटना होती है तो आप tweet करते हैं, पाकिस्तान हमारा दुश्मन मुल्क है, वहां पर कोई घटना होती है, अगर वहां के millitants कहीं massacre करते हैं, तो इंसानियत के नाते प्राइम मिनिस्टर की तरफ से एक स्टेटमेंट आना चाहिए, यह बहुत अच्छी बात है - क्यों नहीं आए, बल्कि यह सब लोगों की तरफ से आना चाहिए। कहीं भी दुनिया में इंसानियत का कत्ल होता है, हत्या होती है तो उस पर अपनी सहानुभूति दिखानी चाहिए। वज़ीर-ए-आज़म वहां सहानुभूति दिखाएंगे, लेकन जैसा मैंने कल भी बताया था कि अपने मुल्क का ताज जल रहा है, उसकी गर्मी सिर को भी महसूस नहीं होती! दिल तक पहुंचे या न पहुंचे, लेकिन सिर को तो गर्मी महसूस होनी चाहिए। वज़ीर-ए-आज़म ने कहा, कश्मीर बहुत खूबसूरत है। मैं पहले ही कह चुका हूं, कश्मीर बहुत खूबसूरत है, लेकिन मैं यह भी कह चुका हूं कि कश्मीर को कश्मीर की खूबसूरती के लिए प्यार मत करिए। कश्मीर को उन फूलों, वादियों और हवा के लिए प्यार मत करिए, कश्मीर को उन पहाड़ों, दरियाओं और झरनों के लिए प्यार मत करिए। जो उनके लिए कश्मीर बनाया गया है - चाहे आज से पहले हिन्दू थे, मुसलमान थे या बुद्धिस्ट थे, जिस पर हिन्दुओं ने भी राज किया, मुसलमानों ने भी राज किया, बुद्धिस्ट ने भी राज किया, सिखों ने भी राज किया, महाराजाओं ने राज किया। शायद हिन्दुस्तान में एक ही मिसाल होगी कि जो कड़ी 5,000 साल की थी और Democracy में भी हमारे बुज़ुर्ग, जिनका हम बहुत आदर करते हैं, वे यहां मौजूद हैं। तो 5,000 वर्ष का जो कश्मीर का इतिहास है, तारीख है, उसमें सब

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

लोगों ने हुकूमत की है, सब मज़हबों के लोगों ने हुकूमत की है। उससे तो प्यार है, लेकिन उसके लोगों से, उसमें बसने वाले लोगों से तो कोई प्यार करे। उन लोगों से, उन बच्चों से भी तो कोई प्यार करे, जिनकी आंखें चली गयीं। उन बहनों से, उन बहू-बेटियों से भी तो कोई प्यार करे। अगर WhatsApp देखें तो उन छोटी-छोटी बच्चियों, नौजवान बच्चों के चेहरों पर तीन-तीन सौ, चार-चार सौ pellet guns के छर्रे लगे हैं। आप उन बूढ़ों को देखिए। मैं मानता हूं कि militancy का मुकाबला हम सबको करना चाहिए, हम सब militancy का शिकार हुए हैं। जो कश्मीर में रहते हैं, वे हिन्दू हों या मुसलमान, मुझसे लेकर सब लोग उस militancy का शिकार हैं और militancy का भी हम ही ने मुकाबला किया है। कभी-कभी हमारे उस तरफ के साथी, बीजेपी के लोग खड़े होते हैं, आप तो शायद स्टेटमेंट देते हैं, लेकिन हम लोगों ने तो अपने near and dear ones खोए हैं। ...(व्यवधान)... आप तो देश में वोट के लिए स्टेटमेंट देते रहे हैं, लेकिन हम physically उनसे लड़ते रहे हैं। ...(व्यवधान)... हम तो लड़ते रहे हैं। ...(व्यवधान)...

---

†**جناب غلام نبی آزاد:** اس پر بھی اپنا پورا سمرتھن دیتا ہوں ---(مداخلت)--- مائینے چئیرمین صاحب، میں آپ کا بہت بہت شکریہ ادا کرتا ہوں کہ آپ نے اس ہاؤس میں جو یہ روایت قائم کی ہے کہ وقفہ سوال ہمیشہ چلے گا اور وقفہ سوال کو کینسل کرکے کوئی دوسری کارروائی نہیں کرنی چاہیئے، اس روایت سے ہٹ کر صرف ہماری پارٹی ہی نہیں، بلکہ پوری اپوزیشن کی جو مانگ تھی کہ آج کے دن وقفہ سوال کو چھوڑ کر کشمیر کے مدعے پر بحث ہونی چاہیئے، کشیر میں جو حالات ہیں، ان پر بحث ہونی چاہیئے، اس کو آپ نے پرمٹ کیا۔ اس کے لیے میں پورے سدن کی طرف سے اور وپکش کی طرف سے آپ کا شکریہ ادا کرتا ہوں۔

میں گرہ منتری جی کا بہت بہت شکریہ ادا کرتا ہوں ۔ ہمارے پارلیمنٹری افئیرس منسٹر تو اس بحث کو آگے لے جانے کےلیے ٹال مٹول کررہے تھے اور شاید وہ انتظار کررہے تھے کہ دو تین دن میں سیشن ختم ہوجائے گا، تو اس کے ساتھ یہ مسئلہ بھی دبے گا۔ لیکن، میں اپنی طرف سے اور وپکش کے ساتھیوں کی طرف سے آپ کو بھی بہت بدھائی دیتا ہوں کہ کل آپ سدن میں آئے اور کہا کہ بحث بالکل ہوگی اور آج آپ اس کے لیے تیار ہیں۔

سر، مجھے جہاں تک یاد ہے، ایسا پہلے کبھی نہیں ہوا کہ ایک ہی مہینے کے سیشن میں اس پر چوتھی دفعہ چرچہ ہورہی ہے۔ اس پر 18 جولائی 2016 کو شارٹ ڈیوریشن ڈسکشن تھا، جس کا میں نے نوٹس دیا تھا اور ہمارے سبھی

---

† Transliteration in Urdu script.

ساتھیوں نے اس پر بات کی تھی اور اظہارافسوس کیا تھا اس کے بعد آٹھ اور نو اگست کو بھی زیرو آور میں اس پر چرچہ ہوئی، وپکش کے سبھی ساتھیوں اور لیڈرس نے اس پر چرچہ کی اور آج چوتھی دفعہ اس پر چرچہ ہورہی ہے۔ ہم آپ کا شکریہ ادا کرتے ہیں کہ اس مدعے پر دن بھر چرچہ کے لیے آپ نے ہمیں پھر موقع دیا۔ سر، اس سے پہلے اس ہاؤس میں بھی کشمیر کے حالات کو لیکر چرچہ ہوئی۔ ہمارے دلت بھائیوں کو پچھلے کچھ مہینے سے وہی قہر بھگتنا پڑرہا ہے، جو اقلیت کے لوگوں کو پچھلے دو سالوں سے بھگتنا پڑرہا ہے، اس پر بھی دونوں سدنوں میں چرچہ ہوئی۔ چاہے کشمیر کا مدعہ ہو یا دلتوں کا مدعہ ہو، ان دونوں مدعوں پر اس ہاؤس میں یا اس ہاؤس میں ہم نے یہ مانگ کی تھی وزیر اعظم، اس دیش کے پرائم منسٹر خود آئیں۔ ان کو کہیں باہر سے نہیں آنا ہے، امریکہ، برطانیہ یا افریقہ سے نہیں آنا ہے۔

میں بہت خوش ہوا تھا جب وزیراعظم پہلی بار اس پارلیمنٹ ہاؤس میں آئے تھے شاید اپنی پارٹی کی میٹنگ کے لیے، تو انہوں نے اس سدن کو سر نمن کیا تھا کہ یہ دنیا کا سب سے بڑا جمہوریت کا مندر ہے۔ اس کے بعد بڑی خوشی ہوئی کہ وزیراعظم ہمیشہ صبح دس بجے اپنے کمرے میں جو پارلیمنٹ کا کمرہ ہے، آتے ہیں، میں روز ان کی گاڑیاں دیکھتا ہوں، اور چھ بجے تک برابر بیٹھتے ہیں۔ میں نہیں سمجھتا کہ کوئی منسٹر، کوئی ایم پی چاہے رولنگ پارٹی کا ہو یا وپکش کا ہو، صبح دس بجے سے یا ساڑھے دس بجے سے شام تک اپنے کمرے میں رہتا ہو، جیسے پردھان منترجی رہتے ہیں، لیکن پردھان منتری اتنے نزدیک ہوکر بھی پارلیمنٹ سے سب سے زیادہ دور ہیں۔ ان کے کمرے سے لوک سبھا کے لیے کچھ سیکنڈ لگتے ہیں اور ان کے کمرے سے راجیہ سبھا کے لیے پون منٹ یا ایک منٹ لگتا ہے۔ تو ایک منٹ کی دوری اور کچھ سیکنڈوں کی جو دوری ہے، مجھے لگتا

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

ہے کہ وہ کئی ہزار کلومیٹر کی دوریوں سے بھی زیادہ دور ہیں۔ ہم یہاں چرچہ کرتے ہیں، مجھے بڑا اچھا لگا کہ کل گرہ منتری جی نے کہا کہ میں اپنے کمرے میں میٹنگ میں تھا، لیکن کشمیر کے مدعے پر یہاں آپ کو کھڑے ہوتے دیکھا اور بحث ہورہی تھی، تو میں میٹنگ چھوڑ کر آیا کہ کیا ہورہا ہے۔ تو یہاں اس طرح پرائم منسٹر کا ریسپانس ہوتا تھا، پنڈت جواہر لعل نہرو، اندرا گاندھی جی، راجیو گاندھی جی، ڈاکٹر منموہن سنگھ جی اور یہی ریسپانس اٹل بہاری واجپئی جی کا بھی ہوتا تھا۔ اگر وہ پارلیمنٹ میں اپنے کمرے میں ہوتے تھے اور اگر ہاؤس میں کوئی بحث تیز ہورہی ہو تو پردھان منتری فوراً آتے تھے۔ لیکن جب دلتوں کے بارے میں چرچہ ہوئی تو ہم نے اس ہاؤس میں وزیراعظم کو نہیں دیکھا اور دوسرے ہاؤس میں بھی نہیں دیکھا، بلکہ تلنگانہ سے ان کی تقریر سنی کہ وہ دلتوں کو کیا کہنا چاہتے ہیں یا دلتوں کو جو لوگ تنگ کرتے ہیں، ان کے بارے میں کہتے دیکھا۔ سر، جیسا میں نے کہا کہ اس ہاؤس میں چوتھی دفعہ ہم چرچہ کررہے ہیں۔ ہم نے بار بار کہا کہ وزیراعظم کو ہی آنا چاہیے، لیکن ہمارے ہندستان کے وزیر اعظم نے مدھیہ پردیش سے کشمیر کو ایڈریس کیا، لوک سبھا سے ایڈریس نہیں کیا، راجیہ سبھا سے ایڈریس نہیں کیا۔ مجھے نہیں معلوم کہ مدھیہ پردیش ہندستان کی راجدھانی کب تبدیل ہوگئی، ہندستان کی کیپٹل مدھیہ پردیش کب بن گیا اور پارلیمنٹ وہاں کب سے کھلی ہے لوک سبھا اور راجیہ سبھا، جہاں سے وزیراعظم اس دیش کے کشمیر کو ایڈریس کرتے ہیں۔۔۔(مداخلت)۔۔۔

جناب پربھات جھا: چندر شیکھر آزاد کی جنم استھلی تھی وہاں۔۔۔(مداخلت)۔۔۔

جناب سبھاپتی: پلیز، پلیز، بیٹھ جائیے۔ بیٹھ جائیے۔۔۔(مداخلت)۔۔۔ پلیز ۔۔۔(مداخلت)۔۔۔ آرڈر پلیز۔۔۔(مداخلت)۔۔۔ پلیزڈونٹ انٹرپٹ، ۔۔۔(مداخلت)۔۔۔ Don't take up his time... *(Interruptions)...* Please continue.

جناب غلام نبی آزاد : میں مریادا بھی سمجھتا ہوں اور مدّھیہ پردیش کوئی derogatory word نہیں ہے، وہاں پارلیمنٹ یا راجدھانی کھلنا کوئی derogatory word نہیں ہے۔ میں پرائم منسٹر کی عزت بھی کرتا ہوں، بڑی عزت سے ان کا نام لیتا ہوں، لیکن اگر شبد بھی آپ نہیں سنیں گے تو پھر یہ پارلیمنٹ تو بند کرنی پڑے گی ۔۔۔(مداخلت)۔۔۔ میں نے کوئی ایسا شبد نہیں کہا ہے، اس پر آپ کو آپتی ہوگی ۔۔۔(مداخلت)۔۔۔ آپ فکر مت کرئیے وہ اپنے کمرے میں دونوں سدنوں کی پوری کاروائی سنتے ہیں۔ آپ کو کوئی فکر نہیں ہونی چاہئے۔ اتنا تو وہ ضرور کرتے ہیں۔ ان کو سب معلوم ہے کہ کیا ہو رہا ہے۔ تو اس پر افسوس ہوتا ہے اور زخموں پر نمک چھڑکنے کی بات کل ہوئی، جب ہم چوتھی دفعہ اس ہاؤس سے مانگ کر رہے تھے کہ وزیر اعظم کو، پردھان منتری کو یہاں آنا چاہئے۔ کل وہ کہتے ہیں کہ ہمارے چیف منسٹر نے بتایا کہ کچھ بولنا چاہیئے، اس کا مطلب ہے کہ چیف منسٹر نے بتایا تو تب کچھہ بولیں گے۔ اس کا مطلب ہوا کہ ہم جو سب اپوزیشن کے لوگ سدن میں بول رہے تھے، اس سدن کی کوئی قیمت نہیں ہے۔

اپوزیشن کی کوئی قیمت نہیں ہے، ان کا چیف منسٹر کہے گا، تب وہ بولیں گے۔ اس کا مطلب ہے کہ اگر چیف منسٹر نہیں کہتے تو آج بھی وہ نہیں بولتے۔ یہ ایک ہی چیز کے دو مطلب ہیں۔ اتنی ناراضگی بھی کیا ہے؟ اگر افریقہ میں کوئی گھٹنا ہوتی ہے، تو آپ ٹوئیٹ کرتے ہیں، پاکستان ہمارا دشمن ملک ہے، وہاں پر

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

کوئی گھٹنا ہوتی ہے، اگر وہاں کے ملیٹینٹس کہیں massacre کرتے ہیں، تو انسانیت کے ناطے پرائم منسٹر کی طرف سے ایک اسٹیٹمینٹ آنا چاہئے، یہ بہت اچھی بات ہے، کیوں نہیں آئے، بلکہ وہ سب لوگوں کی طرف سے آنا چاہئے۔ کہیں بھی دنیا میں انسانیت کا قتل ہوتا ہے، ہتیہ ہوتی ہے، تو پر اپنی سہانوبھوتی دکھانی چاہئے۔ وزیر اعظم وہاں سہانوبھوتی دکھائی گے، لیکن جیسا میں نے کل بھی بتایا تھا کہ اپنے ملک کا تاج جل رہا ہے، اس کی گرمی سر کو بھی محسوس نہیں ہوتی! دل تک پہنچے یا نہ پہنچے، لیکن سر کو تو گرمی محسوس ہونی چاہئے۔

وزیر اعظم نے کہا، کشمیر بہت خوبصورت ہے۔ میں پہلے ہی کہہ چکا ہوں، کشمیر بہت خوبصورت ہے، لیکن میں یہ بھی کہہ چکا ہوں کہ کشمیر کو کشمیر کی خوبصورتی کے لئے پیار مت کرئیے۔ کشمیر کو ان پھولوں، وادیوں اور ہوا کے لئے پیار مت کرئیے۔ کشمیر کو ان پہاڑوں، دریاؤں اور جھرنوں کے لئے پیار مت کرئیے۔ جو ان کے لئے کشمیر بنایا گیا ہے، چاہے آج سے پہلے ہندو تھے، مسلمان تھے یا بدّھسٹ تھے، جس پر ہندوؤں نے بھی راج کیا، مسلمانوں نے بھی راج کیا، بدھسٹ نے بھی راج کیا، سکھوں نے بھی راج کیا، مہاراجاؤں نے راج کیا۔ شاید ہندوستان میں ایک ہی مثال ہوگی کہ جو کڑی پانچ ہزار سال کی تھی اور ڈیموکریسی میں بھی آج ہمارے بزرگ، جن کا ہم بہت آدر کرتے ہیں، وہ یہاں موجود ہیں، تو پانچ ہزار سال کا جو کشمیر کا اتہاس ہے، تاریخ ہے، اس میں سب لوگوں نے حکومت کی ہے، سب مذہبوں کے لوگوں نے حکومت کی ہے۔ اس سے تو پیار ہے، لیکن اس کے لوگوں سے، اس میں بسنے والے لوگوں سے تو کوئی پیار کرو۔ ان لوگوں سے، ان بچوں سے بھی تو کوئی پیار کرے، جن کی آنکھیں چلی گئیں۔ ان بہنوں سے، ان بہو-بیٹیوں سے بھی تو کوئی پیار کرے۔ اگر واٹس-

اپ دیکھیں تو ان چھوٹی چھوٹی بچیوں، نوجوان بچوں کے چہروں پر تین-تین سو، چار چار سو، پیلیٹ گنس کے چھرّے لگے ہیں۔ آپ ان بوڑھوں کو دیکھئے۔ میں مانتا ہوں کہ ملیٹینسی کا مقابلہ ہم سب کو کرنا چاہئے، ہم سب ملیٹینسی کا شکار ہوئے ہیں۔ جو کشمیر میں رہتے ہیں، وہ ہندو ہوں یا مسلمان، مجھ سے لیکر سب لوگ اس ملیٹینسی کا شکار ہیں اور ملیٹینسی کا بھی ہم ہی نے مقابلہ کیا ہے۔ کبھی کبھی ہمارے اس طرف کے ساتھی، بی-جے-پی- کے لوگ کھڑے ہوتے ہیں، آپ تو شاید اسٹیٹمینٹ دیتے ہیں، لیکن ہم لوگوں نے تو اپنے near and dear ones کھوئے ہیں ---(مداخلت)--- آپ تو دیش میں ووٹ کے اسٹیٹمینٹ دیتے رہے ہیں، لیکن ہم فزیکلی ان سے لڑتے رہے ہیں ---(مداخلت)--- ہم تو لڑتے رہے ہیں ---(مداخلت)-

श्री प्रभात झा: श्यामा प्रसाद मुखर्जी, जो कश्मीर के लिए ...(व्यवधान)...

श्री गुलाम नबी आज़ाद: कश्मीर के लोग आर्मी के साथ ...(व्यवधान)...

†**جناب غلام نبی آزاد :** کشمیر کے لوگ آرمی کے ساتھ ---(مداخلت)--

पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री धर्मेंद्र प्रधान): डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी शहीद ...(व्यवधान)...

श्री गुलाम नबी आज़ाद: आप मिनिस्टर हैं, आप बैठिए। आप पेट्रोलियम मंत्रालय चलाइए, आप बैठ जाइए। ...(व्यवधान)...

†**جناب غلام نبی آزاد :** آپ منسٹر ہیں، آپ بیٹھئے۔ آپ پیٹرولیم منترالیہ چلائیے، آپ بیٹھ جائیے ---(مداخلت)-

श्री सभापति: सब बैठ जाएं, सब बैठ जाएं। ...(व्यवधान)... Please continue. ...*(Interruptions)*...

श्री प्रभात झा: आप शहीदों का अपमान मत करिए। ...(व्यवधान)...

श्री गुलाम नबी आज़ाद: आपका काम * ही रहा है, आपका काम और कुछ नहीं रहा। ...(व्यवधान)... और आप यह भी आखिरी * जा रहे हैं, जब से आपके कदम पड़े, वहां पर * गयी है। ...(व्यवधान)... आप बैठ जाइए। ...(व्यवधान)...

†**جناب غلام نبی آزاد :** آپ کا کام * ہی رہا ہے، آپ کا کام اور کچھ نہیں رہا ---(مداخلت)--- اور آپ یہ بھی آخری * جا رہے ہیں، جب سے آپ کے قدم پڑے، وہاں پر * گئی ہے ---(مداخلت)--- آپ بیٹھ جائیے ---(مداخلت)

†Transliteration in Urdu script.
*Expunged as ordered by the Chair.

श्री सभापतिः बैठ जाइए प्लीज़।

श्री गुलाम नबी आज़ादः जहां भी आपके कदम पड़ते हैं, वहां * निकल आती है। मैं उस रास्ते पर जाना नहीं चाहता था, आग की वजह नहीं बताना चाहता था। आप मुझे मजबूर मत करिए। ...(व्यवधान)...

† جناب غلام نبی آزاد : جہاں بھی آپ کے قدم پڑتے ہیں، وہاں * نکل آتی ہے۔ میں اس راستے پر جانا نہیں چاہتا تھا، آگ کی وجہ نہیں بتانا چاہتا تھا۔ آپ مجھے مجبور مت کرئیے ---(مداخلت)---

श्री धर्मेन्द्र प्रधानः आप कहिए। ...(व्यवधान)...

श्री आनन्द शर्मा (हिमाचल प्रदेश): आप क्यों बीच में बोल रहे हैं? ...(व्यवधान)...

श्री प्रभात झाः श्यामा प्रसाद मुखर्जी साहब शहीद नहीं हुए थे? ...(व्यवधान)...

श्री गुलाम नबी आज़ादः आप मुझे वह बात कहने के लिए मजबूर मत करिए, जिसकी वजह से आग लगी है। ...(व्यवधान)...

† جناب غلام نبی آزاد : آپ مجھے وہ بات کہنے کے لئے مجبور مت کرئیے، جس کی وجہ سے آگ لگی ہے ---(مداخلت)۔

श्री प्रभात झाः आप बताइए, डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी शहीद ...(व्यवधान)...

श्री आनन्द शर्माः उन्हें बोलने दीजिए। ...(व्यवधान)...

MR. CHAIRMAN: Please, please. ...*(Interruptions)*... All sections of the House. ...*(Interruptions)*... Please resume your places. ...*(Interruptions)*... Allow the LoP to speak. ...*(Interruptions)*... बैठ जाइए, बैठ जाइए। ...(व्यवधान)...

श्री आनन्द शर्माः वे बीमार थे, rest house में मरे थे। ...(व्यवधान)... आप गलत बात कर रहे हैं। ...(व्यवधान)... बीच में बोल रहे हैं। ...(व्यवधान)...

श्री धर्मेन्द्र प्रधानः डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी ...(व्यवधान)... डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी पर भी चर्चा होनी चाहिए। ...(व्यवधान)...

श्री सभापतिः बैठ जाइए। Hon. Minister, please sit down. ...*(Interruptions)*... बैठ जाइए, बैठ जाइए। ...(व्यवधान)...

श्री श्वेत मलिक (पंजाब): आपके शासन में कश्मीर जला है। ...(व्यवधान)...

---

*Expunged as ordered by the Chair.

श्री गुलाम नबी आज़ाद: सर, मैं ...(व्यवधान)...

† جناب غلام نبی آزاد : سر، میں--(مداخلت)--

श्रीमती विप्लव ठाकुर (हिमाचल प्रदेश): यह बड़े अफसोस की बात है कि ...(व्यवधान)...

सभा के नेता (श्री अरुण जेटली): माननीय सभापति जी, जम्मू-कश्मीर आज sensitive स्थिति में है और इसलिए आवश्यकता है कि यह सदन उसके संबंध में जहां तक संभव हो, एक आवाज़ में बोले। ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: आप सुन लीजिए। ...(व्यवधान)... आप बात को सुन लीजिए। ...(व्यवधान)... Please sit down. ...*(Interruptions)*... Please allow the Leader of the House. ...*(Interruptions)*...

श्री अरुण जेटली: इसलिए ऐतिहासिक दृष्टि से कई ऐसे विषय हैं, जहां पर हमारे आपस में मतभेद रहे हैं, लेकिन आज उपयुक्त समय नहीं है कि हम उन विषयों को लेकर इस बहस को किसी और दिशा में ले जाएं। ...(व्यवधान)... मैं नेता प्रतिपक्ष से और बाकी सभी सदस्यों से आग्रह करूंगा कि जहां तक संभव हो, ...(व्यवधान)... बहस का एक राष्ट्रीय दृष्टिकोण हम मद्देनज़र रखें। ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: शरद जी, आप कुछ कहना चाहते हैं? आप बोलिए।

श्री शरद यादव (बिहार): सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से एक विनती करना चाहता हूं कि यहां पर जो भी सदस्य बोल रहे हैं और ट्रेज़री बेंच के मित्रों से मेरा कहना है कि आपका वक्त आएगा, आप अपनी तरफ से सारी बात रख सकते हैं। नेता विपक्ष अपनी बात रख रहे हैं। हम एक-दूसरे की बात सुनें। कश्मीर के मामले में लोगों की दो राय नहीं है, एक राय है, लेकिन बीच में कोई बात कहता है, तो उस पर रिएक्ट करने की ज़रूरत नहीं है। हम एक-दूसरे को सुनने का काम करें।

श्री सभापति: थैंक्यू शरद जी। Please resume. ...*(Interruptions)*... Let us proceed. ...*(Interruptions)*...

श्री गुलाम नबी आज़ाद: सभापति महोदय, मैं लीडर ऑफ द हाउस और होम मिनिस्टर की बहुत कद्र करता हूं। मैंने शुरू में ही कहा था कि मेरी कोई intention नहीं है कि आज पुरानी चीज़ों को उठाया जाए। हम भी पुरानी चीज़ों को उठाएंगे कि 1947 में आपका क्या रोल रहा और हमारा क्या रोल रहा, फिर हम इस बहस से हट जाएंगे। मेरा आपसे निवेदन है कि जो पार्लियामेंटरी चीज़ें नहीं हैं, उन पर आपको क्या तकलीफ होती है? हम अपोज़िशन में हैं। आप चाहते हैं कि हम भी सरकार की ज़बान बोलें, तो फिर हमें घर बैठना चाहिए। हम अपोज़िशन में हैं, तो अपोज़िशन की भाषा बोलेंगे। जब आप यहां पर लीडर ऑफ द अपोज़िशन थे, तो हम आपको सुनते थे। रूलिंग पार्टी के मेम्बर्स को, मिनिस्टर्स को तो सूझबूझ है और वे सुनते हैं। ...(व्यवधान)...

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

†**جناب غلام نبی آزاد** : سبھا پتی مہودے، میں لیڈر آف دی ہاؤس اور ہوم منسٹر کی بہت قدر کرتا ہوں۔ میں نے شروع میں ہی کہا تھا کہ میری کوئی انٹینشن نہیں ہے کہ آج پرانی چیزوں کو اٹھایا جائے۔ ہم بھی پرانی چیزوں کو اٹھائیں گے کہ 1947 میں آپ کا کیا رول رہا ہے اور ہمارا کیا رول رہا ؟ پھر ہم اس بحث سے ہٹ جائیں گے۔ میرا آپ سے نویدن ہے کہ جو ان-پارلیمنٹری چیزیں نہیں ہیں، ان پر آپ کو کیا تکلیف ہوتی ہے؟ ہم اپوزیشن میں ہیں۔ آپ چاہتے ہیں کہ ہم بھی سرکار کی زبان بولیں، تو پھر ہمیں گھر بیٹھنا چاہئے۔ ہم اپوزیشن میں ہیں، اپوزیشن کی بھاشا بولیں گے۔ جب آپ یہاں پر لیڈر آف دی اپوزیشن تھے، تو ہم آپ کو سنتے تھے۔ رولنگ پارٹی کے ممبرس کو، منسٹرس کو تو سوجھ بوجھ ہے اور وہ سنتے ہیں ...(مداخلت)...

श्री शरद पवार (महाराष्ट्र): मिनिस्टर सुनते नहीं हैं। ...(व्यवधान)... ये भी सुनते नहीं हैं। ...(व्यवधान)...

श्री गुलाम नबी आज़ाद: नये-नये मिनिस्टर हैं। पहली दफा बने हुए मिनिस्टर हैं, जो पुराने मिनिस्टर हैं, चाहे इधर वाले हों, चाहे उधर वाले हों, उनको पता है कि किस सीमा में रहना है, नये मिनिस्टरों को पता नहीं होता है। ...(व्यवधान)...

†**جناب غلام نبی آزاد** : نئے نئے منسٹر ہیں۔ پہلی دفعہ بنے ہوئی منسٹر ہیں، جو پرانے منسٹر ہیں، چاہے ادھر والے ہوں، چاہے ادھر والے ہوں، ان کو پتہ ہے کہ کس سیما میں رہنا ہے، نئے منسٹروں کو پتہ نہیں ہوتا ہے...(مداخلت)...

MR. CHAIRMAN: Please proceed. ...*(Interruptions)*...

श्री गुलाम नबी आज़ाद: "नाम सिकंदर रखने से, वक्त सिकंदर हो न सका।" ...(व्यवधान)... इसलिए जो वज़ीर-ए-आज़म ने कहा कि इंसानियत, जम्हूरियत और कश्मीरियत को हमने आगे चलाना है। मैं अटल बिहारी वाजपेयी जी की बहुत कद्र करता रहा, बहुत अरसे तक मैं पार्लियामेंटरी अफेयर्स मिनिस्टर रहा और वे विपक्ष के नेता था, तो मुझे उनके साथ बहुत समय तक काम करने का मौका मिला। कुछ चीज़ें थीं, जो अटल जी के मुंह से ही अच्छी लगती थीं। वे सब के मुंह से अच्छी नहीं लगती हैं। हमारे भूतपूर्व प्रधान मंत्री जी यहां पर बैठे हैं, जो बातें इनके मुंह से अच्छी लगेंगी, शायद वे मेरे मुंह से अच्छी नहीं लगेंगी, क्योंकि उसमें इंसान का character भी उसी ढांचे का होना चाहिए। वह कश्मीरियत, इंसानियत और जम्हूरियत उनके मुंह से अच्छी लगती थी। मैं यह नहीं कहता कि उस

† Transliteration in Urdu script.

कश्मीरियत, जम्हूरियत और इंसानियत के नाते कश्मीर का कितना हल निकला, मैं उसमें नहीं जाना चाहता हूं, लेकिन वे कई चीज़ों पर यकीन करते थे - इंसानियत पर भी, जम्हूरियत पर भी और लोकतंत्र पर भी। जब दूसरे लोग बोलते हैं, जो इन चीज़ों पर विश्वास ही नहीं रखते हैं, तो बड़ा अटपटा लगता है। आज हमारी लड़ाई कश्मीर में जम्हूरियत, इंसानियत और कश्मीरियत की है। कश्मीरियत क्या है? यह sufism है। कुछ लोग अलाहिदगी पसंद हो सकते हैं, अलाहिदा देश बनाने की बात करने वाले हैं, लेकिन वहां communalism नहीं है। There is a difference between communalism and separatism. Separatism के नारे हैं। यह ठीक है कि militants ने कश्मीरी भाइयों को भगाया, लेकिन militants मुसलमानों को कौन सा छोड़ रहे हैं? आप देखिए कि कितने मारे हैं, जितने मारे हैं, उनमें 95 per cent तो मुसलमान हैं। Militants का कोई धर्म नहीं होता है, कोई मज़हब नहीं होता है, militants तो militants हैं। चाहे वह कश्मीर का militants हो, चाहे पंजाब का militants हो, चाहे वह दुनिया का कोई भी ISIS का militants हो, उसका कोई मज़हब नहीं है। चाहे वह कोई भी आतंकवादी हो, उसका काम है आतंक पैदा करना, लेकिन कश्मीर फिरकापरस्त नहीं है, वह सेक्युलर है। आज उसी कश्मीरियत और इंसानियत का जो खात्मा किया जा रहा है, That is not flowing through democracy but through the barrel of the gun in the form of the pellet guns.

आज जम्हूरियत का, इंसानियत का और कश्मीरियत का कत्ल हो रहा है, यही तो हम कहते हैं कि इसका हल निकालें और सब मिलकर निकालें। इसके हल के लिए आप बैठेंगे, हम बैठेंगे। मैं यह बात पहली दफा नहीं कह रहा हूं, मैं परसों भी यह कह चुका हूं। जब मैं 1947 में पैदा भी नहीं हुआ था, तब से यह चल रहा है। यह कई दफा हुआ और मेरे मुख्य मंत्री के वक्त में भी हुआ। अगर मुझे अच्छी तरह याद है, तो मेरे वक्त में 5 लोग मारे गए थे, फिर PDP ने support withdraw किया, उसके बाद भी यह दो महीने तक चला, क्योंकि जम्मू के लोगों ने economic blockade किया। उस economic blockade के खिलाफ कश्मीरी POK की तरफ चलने लगे। फिर फायरिंग हुई और उसमें 55 लोग मरे, लेकिन तब तक मैं चीफ मिनिस्टर नहीं था, लेकिन मेरे अपने वक्त में भी मैंने इसको झेला। जब हमारी और फारुक साहब की गवर्नमेंट थी, उस वक्त भी हुआ, तो आज हम कश्मीर के ऊपर किसी को इल्जाम नहीं लगा रहे हैं। मैं बार-बार कहता हूं कि कश्मीर की स्टेट गवर्नमेंट, चाहे वह मेरे वक्त की हो, फारुक साहब के वक्त की हो, उमर साहब के वक्त की हो, मुफ्ती साहब के वक्त की हो या फिर महबूबा जी के वक्त की हो, यह नार्मल लॉ एंड ऑर्डर नहीं है। माफ कीजिए, जम्मू और कश्मीर में लॉ एंड ऑर्डर केवल कश्मीर पुलिस नहीं करती है, पैरामिलिट्री फोर्सेज़ और पुलिस दोनों करती हैं, हिन्दुस्तान के बाकी हिस्से में लोकल पुलिस करती है। पिछले 25-26 साल से, जब से यहां militancy शुरू हुई है, दोनों मिलकर करते हैं। वहां का लॉ एंड ऑर्डर मध्य प्रदेश और राजस्थान का लॉ एंड ऑर्डर नहीं है। जम्मू और कश्मीर में चाहे किसी की भी गवर्नमेंट हो, इस स्टेट के पास इतने रिसोर्सेज़ नहीं हैं। हम डेवलपमेंट के लिए, विकास के लिए, पैसे के लिए और तनख्वाह के लिए सेन्टर की गवर्नमेंट पर निर्भर रहते हैं। हमारे रिसोर्सेज़ न होने के बराबर हैं। यहां से अगर कोई यह कह दे कि महबूबा मुफ्ती को सुलझाना चाहिए, तो माफ कीजिए, I think, you are asking for too much. यह उसके वश का नहीं है, मेरे वश का नहीं था, उमर साहब और फारुक साहब के वश का नहीं है, क्योंकि हमारे पास इतनी ताकत नहीं है, इतने रिसोर्सेज़ नहीं हैं, हमारे पास मैनपावर नहीं है, हमारे पास इतने सिक्योरिटी फोर्सेज़ नहीं हैं और सिक्योरिटी फोर्सेज़ रेज़ करने के लिए हमारे रिसोर्सेज़ नहीं हैं। डॉक्टर

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

साहब अच्छी तरह से जानते थे, अक्टूबर, 1947 में जब कबाइली आए थे, तब भी गवर्नमेंट ऑफ इंडिया को उस तरफ रुझान करना पड़ा था। अगर यहीं से फोर्सेज़ नहीं पहुंचाई जाती तो क्या का क्या हो जाता। तो हम निर्भर हैं, हम क्यों नहीं निर्भर होंगे, आप सुबह-शाम कहते हैं, Jammu and Kashmir is the integral part of India. But 'integral part of India' should not be on the paper only. There should be integration of minds; there should be integration of hearts. What we are asking for is this. Yes, Jammu and Kashmir is the integral part of India but what about the integration of hearts between the people of Kashmir and the people of India; what about the integration between the Governments, the federal Government and the State Government? There has to be some coherence, there has to be some integration, and there has to be some love and affection. There is some pain, agony, which we are not feeling. अगर होती तो 32 दिन के बाद स्टेटमेंट मध्य प्रदेश से नहीं बल्कि इस सदन के अंदर आता। यह दर्द यहां से, जब दिल से निकलेगा, तो इस की आवाज कश्मीर तक पहुंचेगी, लेकिन अगर जुबान से कहेंगे, तो वह चारदीवारी में गायब हो जाएगा।

माननीय चेयरमैन साहब, हम ने कुछ कदम उठाए थे। मैं यह नहीं कह सकता कि वे conclusion तक पहुंचे। मुझे खुशी है कि मैं उस समय चीफ मिनिस्टर था और डा0 मनमोहन सिंह जी प्राइम मिनिस्टर ऑफ इंडिया थे, उस समय तीन राउंड टेबल कान्फ्रेंस हुई और उन तीनों राउंड टेबल कान्फ्रेंस की सदारत जनाब डा0 मनमोहन सिंह जी ने की। पहली राउंड टेबल कांफ्रेंस 25 फरवरी, 2006 को नई दिल्ली में हुई, दूसरी दो दिन की राउंड टेबल कान्फ्रेंस 24-25 मई, 2006 को श्रीनगर में हुई और तीसरी राउंड टेबल कान्फ्रेंस नई दिल्ली में 24 अप्रैल, 2007 को हुई। मुझे खुशी है कि सभी पॉलिटिकल पार्टीज - चाहे वह कांग्रेस है, नेशनल कांग्रेस है, पीडीपी है, बीजेपी है, सीपीआईएम है, सीपीआई है, पीपुल्स डेमोक्रेटिक फोरम है, समाजवादी पार्टी है, बीएसपी है, रीजनल ethnic groups लद्दाख के हैं, कारगिल के हैं, कश्मीरी पंडितों की 3 ऑर्गनाइजेशंस हैं, पुन्नून कश्मीर, कश्मीरी पंडित समिति, गुज्जर representatives, बकरवाल representatives, पहाड़ी representatives, Scheduled caste representatives, Sikh representatives, डोगरा सभा, जम्मू कश्मीर, ये तमाम 60-65 के करीब लोगों ने उस में शिरकत की थी। सिर्फ हुर्रियत ने उसे नहीं माना, बाकी इन राउंड टेबल कान्फ्रेंस में सभी religious groups, पॉलिटिकल पार्टीज, ethnic groups, तीनों रीज़ंस ने इन में शुमूलियत बड़ी अच्छी तरह से की। सर, उन राउंड टेबल कान्फ्रेंस के बाद 5 वर्किंग ग्रुप्स बने और मुझे यह कहते हुए खुशी है कि हमारे आज के वाइस प्रेसीडेंट ऑफ इंडिया और हमारे चेयरमैन, राज्य सभा जनाब मोहम्मद हामिद अंसारी साहब उस Human right commission के और confidence building measures across the segments of the society के भी चेयरमैन थे। सर, इसके तहत कई सिफारिशात आईं, उनमें से कई लागू हुई हैं और मुझे यह कहते हुए खुशी है कि militancy widows को अलग से तो नहीं, लेकिन जो पैसा आम widows का मिलता है, वह उन्हें भी दिया गया।

कश्मीरी पंडितों के बारे में यहां चर्चा होती है। मुझे यह कहते हुए खुशी है कि प्रधान मंत्री जी ने जो स्कीम शुरू की और पैसा दिया, मेरे वक्त में ही उस से जम्मू में 5,242 फ्लैट्स बने और वहां hundred percent occupancy है। हमने employees के लिए कश्मीर के काजीकुंड में 225 फ्लैट्स,

शेखपुरा बडगाम में 200, फुलवामा में 60, कुपवाड़ा में 60, बारामूला में 125 फ्लैट्स बनाए। फिर कश्मीरी पंडितों के लिए 300 बनाए। हमने उन्हीं के लिए स्पेशली नौकरियां कीं और उसके तहत 1,750 लोग तभी उन नौकरियों में लगे और वही वहां कश्मीर में ट्रांजिट कैम्प्स में रहते हैं। बाद में उनके 900 लोगों की भर्ती के लिए एक और advertisement निकाला गया था, लेकिन कश्मीरी पंडित भाई आपस में कोर्ट में चले गए।

इसी तरह से दूसरे Confidence building measures के तहत उस समय श्री एम. के. रसगोत्रा, पुराने फॉरेन सेक्रेटरी की अगुवाई में strengthening relations across the line of control पर बहुत काम हुआ। उस वक्त के वज़ीर-ए-आज़म डा0 मनमोहन सिंह जी और यूपीए की चेयरपर्सन श्रीमती सोनिया गांधी और उस वक्त के मुख्य मंत्री जनाब मुफ्ती मोहम्मद सईद की मौजूदगी में 25 अप्रैल को मुजफ्फराबाद के लिए उडी से रोड सर्विस शुरू की गई। इन दोनों जगहों से ट्रेड शुरू हो गया। हमने इसको भी implement किया।

तीसरी बात, economic development की थी। श्री सी. रंगराजन जी उसके चेयनमैन थे। उस economic development में रोड़, रेलवे, कम्युनिकेशन, डीज़ल, टूरिज्म आदि के मुद्दे थे। वज़ीर-ए-आजम ने 22 टूरिज्म अथॉरिटीज़ दीं, तब वे मुकम्मल भी हो गईं। वैली के अंदर तमाम रेलवे लाइन्स बिछाई गईं। मुझे याद है कि मुझे तीन या चार दफ़ा, डा. मनमोहन सिंह जी के साथ और यूपीए की चेयरपर्सन, सोनिया गाँधी जी के साथ जाने का मौका मिला। जम्मू प्रोविंस के भी एक हिस्से बनिहाल तक, बारामूला से लेकर बनिहाल तक, पूरी वादी में और जम्मू के कुछ हिस्से तक, रेल सर्विस शुरू की गई।

इसी तरह से अगर मैं ensuring good governance के बारे में, उसके लिए उठाए गए बहुत सारे कदमों के बारे में बताऊंगा, तो शायद यहाँ पर आधा घंटा लगेगा, लेकिन मेरे पास उतना समय नहीं है। एक रिपोर्ट, जो बहुत sensetive है, जिस पर पूरे सदन को, पूरी पार्टीज़ को काम करना होगा, क्योंकि वह काम किसी एक पार्टी के बस का नहीं है, that is, strengthening relation between the State and the Centre. उसमें बहुत सारी चीज़ें हैं। उनमें democracy, secularism, devolution of power, etc. ये तमाम चीज़ें हैं। इसकी रिपोर्ट थी। इसके जो चेयरमैन थे, वे Late (Justice) Saghir Ahmed थे, He was a retired Supreme Court Judge. Prior to that, he was the Chief Justice of High Court. यह सब्जेक्ट जितना complex था, उतना ही इसमें समय लगा। वह रिपोर्ट 2009, 10 में आई थी, तब तक तो यूपीए-2 भी बन गई थी। मैं भी वहाँ से आया, लेकिन उसमें भी, अभी तक कुछ नहीं हो पाया है। मेरे कहने का मतलब है कि इस तरह से इक़दामात उठाए गए।

यूपीए-2 में, डा. मनमोहन सिंह की लीडरशिप में एक बहुत बड़ा काम हुआ था, जिसको हमने बहुत फॉलो अप किया था। कश्मीर के लिए "उम्मीद" स्कीम, अर्थात् आशा, यह जो स्कीम है, जो "उम्मीद" स्कीम बनाई गई, It was meant for Women's Self Help Groups. इसमें बहुत काम हुआ है, "उड़ान" स्कीम, Udaan was meant for providing jobs to the educated unemployed. इस स्कीम में बहुत काम हुआ है, जयराम रमेश जी, इसको मॉनिटर करते थे, वे रूरल डेवलपमेंट मिनिस्टर थे, "हिमायत" *Himayat* was meant for providing jobs to school and college

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

dropouts. इसमें बहुत काम हुआ है, Then we had the JKEDI for entrepreneurship development. इसमें भी बहुत काम हुआ है। ये बहुत सारी चीज़ें हैं।

हमारी यूपीए-1 और यूपीए-2 में बहुत सारे confidence building measures हुए। इनमें से कइयों को लागू किया गया है। मैंने शुरू में ही कहा था कि मैं यह नहीं कह सकता कि "सब दूध का दूध और पानी का पानी" हो गया है, क्योंकि कश्मीर बड़ा complex मामला है। यहाँ पहले नंबर पर पॉलिटिक्स आती है, दूसरे नंबर पर economics आती है और तीसरे नंबर पर employment और अन्य चीज़ें आती हैं। जहाँ हम employment provide करने की बात करेंगे, जहाँ तक हम सड़कों और रोड्स की बात करेंगे, बिजली और पानी की बात करेंगे, वहाँ अगर हम वहाँ की पॉलिटिकल की बात नहीं करेंगे, तो मेरे ख्याल से हम बिल्कुल गलत रास्ते पर जा रहे हैं। इसलिए हमारी आज की मांग की जो मंशा थी, वह चाहे मेरी पार्टी की रही हो या मेरे साथियों की रही हो, वह यही मंशा थी कि कश्मीर में आज 32, 33 दिनों से कर्फ्यू लगा है और हज़ारों लोग जख्मी हैं, वे चाहे सिक्युरिटी फोर्सेज़ के लोग हों, चाहे सिविलियन्स हों। हमें जहाँ सिविलियन्स के मरने और जख्मी होने का दुख है, वे चाहे बच्चे हों, बहू, बेटियाँ हों, औरतें हों, बूढ़े हों या नौजवान हों, हमें जितना उनके लिए दुख और अफ़सोस है, उतना ही दुख और अफ़सोस, हमारे जो सिक्योरिटी फोर्सेज़ के लोग हैं, उनके लिए भी है, फिर वे चाहे जे. एंड के. पुलिस के हों, सीआरपीएफ के हों - आख़िरकार वे भी तो किसी के बच्चे हैं, वे भी हमारे देश का हिस्सा हैं, हमारे मुल्क का हिस्सा हैं, उनको जो काम दिया गया है, वे वह काम करते हैं, लेकिन जब भी वे लक्ष्मण रेखा क्रॉस कर देते हैं, तो उस लक्ष्मण रेखा को क्रॉस करने पर उनकी निन्दा भी होती है। सिक्युरिटी फोर्सेज़ का काम लॉ एंड ऑर्डर को मेंटेन करने का होता है, लेकिन उसमें दोनों तरफ से नुक़सान होता है। यह ठीक है कि पब्लिक का, सिविलियन्स का बहुत नुकसान हुआ है, तब ऐसे में, जब पार्लियामेंट चल रही है तो यह अल्मिया बनता है, जरूरी बनता है कि हम, तमाम पॉलिटिकल पार्टीज़, वे चाहें विपक्ष की पॉलिटिकल पार्टीज़ हों या सत्ताधारी पॉलिटिकल पार्टी हो, रूलिंग पार्टी हो, हम सभी को उनके दुख और दर्द में शामिल होना चाहिए। इस पूरे सदन को, पार्लियामेंट को कश्मीर के अवाम से, बच्चों से, नौजवानों से एक अपील करनी चाहिए कि वे अमन और शान्ति बहाल करें, ताकि हम सब मिल कर उनकी खुशहाली के लिए, जम्मू-कश्मीर के लोगों की खुशहाली के लिए, उन बच्चों के मुस्तक़बिल के लिए कुछ कर पाएँ। मेरे ख्याल में इस तरह की आवाज इस सदन से जानी चाहिए; इस तरह की आवाज, इस तरह की अपील इस पार्लियामेंट से जानी चाहिए। यह माँग करने का हमारा यही मकसद था। इसके साथ ही वहाँ All-Party Delegation जाना चाहिए। माननीय गृह मंत्री जी वहाँ गए, ठीक है, आप एक दफा हो आए, लेकिन मुझे लगता है कि आने वाले हफ्ते-दस दिन के अन्दर अगर इसके जाने का announcement भी हो जाए, तो अच्छा होगा, क्योंकि दो दिन के बाद पार्लियामेंट का सेशन खत्म हो जाएगा, तो सभी एमपीज़ अपना-अपना प्रोग्राम बनाएँगे, फिर उनको ढूँढना मुश्किल होगा। आज और कल के अन्दर अगर इसी सदन में All-Party Delegation की date का announcement हो जाए, तो अच्छा होगा। एक All-Party Meeting यहाँ भी हो जाए, एक All-Party Delegation कश्मीर चला जाए, यह हमारी माँग है। आपका बहुत-बहुत शुक्रिया जनाब-ए-सदर।

† **غلام نبی آزاد :** "نام سکندر رکھنے سے، وقت سکندر ہو نہ سکا" ---(مداخلت)---

اس لئے جو وزیر اعظم نے کہا کہ انسانیت، جمہوریت اور کشمیریت کو ہم نے آگے چلانا ہے۔ میں اٹل بہاری واجپئی جی کی بہت قدر کرتا رہا، بہت عرصے تک میں پارلیمنٹری افیئرس منسٹر رہا اور وہ وپکش کے نیتا تھے، تو مجھے ان کے ساتھ بہت وقت تک کام کرنے کا موقع ملا۔ کچھ چیزیں تھیں، جو اٹل جی کے منھ سے ہی اچھی لگتی تھیں۔ وہ سب کے منھ سے اچھی نہیں لگتی ہیں۔

ہمارے سابق پردھان منتری جی یہاں پر بیٹھے ہیں، جو باتیں ان کے منھ سے اچھی لگیں گی، شاید وہ میرے منھ سے اچھی نہیں لگیں گی، کیوں کہ اس میں انسان کا کریکٹر بھی اسی ڈھانچے کا ہونا چاہئے۔ وہ کشمیریت، انسانیت اور جمہوریت ان کے منھ سے اچھی لگتی تھی۔ میں یہ نہیں کہتا کہ اس کشمیریت، جمہوریت اور انسانیت کے ناطے کشمیر پر کتنا حل نکلا، میں اس میں نہیں جانا چاہتا ہوں، لیکن وہ کئی چیزوں پر یقین کرتے تھے — انسانیت پر بھی، جمہوریت پربھی لوکتنتر پر بھی۔ جب دوسرے لوگ بولتے ہیں، جو ان چیزوں پر وشواس ہی نہیں رکھتے ہیں، تو بڑا الٹا لگتا ہے۔ آج ہماری لڑائی کشمیر میں جمہوریت، انسانیت اور کشمیریت کی ہے۔ کشمیریت کیا ہے، یہ صوفی-ازم ہے، کچھ لوگ علیحدگی پسند ہو سکتے ہیں، علیحدہ دیش بنانے کی بات کرنے والے ہیں، لیکن وہاں کمیونلزم نہیں ہے۔

There is a difference between communalism and separatism. Separatism کے نعرے ہیں۔ یہ ٹھیک ہے کہ ملیٹینٹس نے کشمیری بھائیوں کو بھگایا، لیکن ملیٹینٹس مسلمانوں کو کون سا چھوڑ رہے ہیں؟ آپ دیکھئے کہ کتنے مارے ہیں، جتنے مارے ہیں، ان میں 95 فیصد تو مسلمان ہیں۔ ملیٹینٹس کا کوئی دھرم نہیں ہوتا ہے، کوئی مذہب نہیں ہوتا ہے، ملیٹینٹس تو ملیٹینٹس ہیں۔ چاہے وہ کشمیر کا ملیٹینٹس ہو، چاہے پنجاب کا ملیٹینٹس ہو، چاہے وہ دنیا کا کوئی بھی ISIS کا ملیٹینٹس ہو، اس کا کوئی مذہب نہیں ہے۔ چاہے وہ کوئی بھی آتنک وادی ہو، اس کا کام ہے آتنک پیدا کرنا، لیکن کشمیر فرقہ پرست نہیں ہے، وہ سیکولر ہے۔ آج اسی کشمیریت اور انسانیت کا جو خاتمہ کیا جارہا ہے، That is not flowing

† Transliteration in Urdu script.

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

through democracy but through the barrel of the gun in the form of the pellet guns.

آج جمہوریت کا، انسانیت کا اور کشمیریت کا قتل ہورہا ہے، یہی تو ہم کہتے ہیں کہ اس کا حل نکالیں اور سب مل کر نکالیں۔ اس کے حل کے لیے آپ بیٹھیں گے، ہم بیٹھیں گے۔ میں یہ بات پہلی دفعہ نہیں کہہ رہا ہوں، میں پرسوں بھی یہ کہہ چکا ہوں۔ جب میں 1947 میں پیدا بھی نہیں ہوا تھا، تب سے یہ چل رہا ہے۔ یہ کئی دفعہ ہوا اور میرے مکھیہ منتری کے وقت میں بھی ہوا۔ اگر مجھے اچھی طرح یاد ہے، تو میرے وقت میں پانچ لوگ مارے گئے تھے، پھر پی ڈی پی نے سپورٹ وتھڈرا کیا۔ اس کے بعد بھی یہ دو مہینے تک چلا، کیوں کہ جموں کے لوگوں نے economic blockade کیا۔ اس economic blockade کے خلاف کشمیری POK کی طرف چلنے لگے۔ پھر فائرنگ ہوئی اور اس میں 55 لوگ مرے، لیکن تب تک میں چیف منسٹر نہیں تھا، لیکن میرے اپنے وقت میں بھی میں نے اس کو جھیلا۔ جب ہماری اور فاروق صاحب کی گورنمنٹ تھی، اس وقت بھی ہوا، تو آج ہم کشمیر کے اوپر کسی کو الزام نہیں لگارہے ہیں۔ میں بار بار کہتا ہوں کہ کشمیر کی اسٹیٹ گورنمنٹ، چاہے وہ میرے وقت کی ہو، فاروق صاحب کے وقت کی ہوں، عمرصاحب کے وقت کی ہو، مفتی صاحب کے وقت کی ہو یا پھر محبوبہ جی کے وقت کی ہو، یہ نارمل لا اینڈر آرڈر نیں ہے۔ معاف کیجئے، جموں و کشمیر میں لااینڈر آرڈر صرف کشمیر پولیس نہیں کرتی ہے، پیراملٹری فورسیز اور پولیس دونوں کرتی ہیں، ہندستان کے باقی حصے میں لوکل پولیس کرتی ہے۔ پچھلے 25-26سال سے، جب سے یہاں militancy شروع ہوئی ہے، دونوں ملکر کرتے ہیں۔ وہاں کا لا اینڈ آرڈر مدھیہ پردیش اور راجستھان کا لااینڈر آرڈر نہیں ہے۔ جموں وکشمیر میں چاہے کسی کی بھی گورنمنٹ ہو، اس اسٹیٹ کے پاس اتنے ریسورسیز نہیں ہیں۔ ہم ڈیولپمنٹ کے لیے، وکاس کے لیے، پیسے کے لیے اور تنخواہ کے لیے سینٹر کی گورنمنٹ پر منحصر رہتے ہیں۔ ہمارے ریسورسیز نہ ہونے کے برابر ہیں۔ یہاں سے اگر کوئی یہ کہہ دے کہ محبوبہ مفتی کو سلجھانا چاہیئے، تو معاف کیجئیے، I think, you are asking for too much. یہ اس کے بس میں نہیں ہے، میرے بس میں نہیں تھا، عمرصاحب اور فاروق صاحب کے بس میں نہیں ہے، کیوں کہ ہمارے پاس اتنی طاقت نہیں ہے، اتنے ریسورسیز نہیں ہیں، ہمارے پاس مین پاور نہیں ہے، ہمارے پاس اتنے سیکورٹی فورسیز نہیں ہیں اور سیکورٹی فورسیز ریز کرنے کے لیے ہمارے ریسورسیز نہیں ہیں۔ ڈاکٹرصاحب اچھی طرح سے جانتے تھے، اکتوبر 1947 میں جب قبائلی آئے تھے، تب بھی گورنمنٹ آف انڈیا کو اس طرف رجحان کرنا پڑا تھا۔ اگر یہیں سے فورسیز نہیں پہنچائی جاتی تو کیا کا کیا ہوجاتا۔ تو ہم منحصر ہیں، ہم کیوں نہیں منحصر ہونگے، آپ صبح شام کہتے ہیں،

Jammu and Kashmir is the integral part of India. But 'integral part of India' should not be on the paper only. There should be integration of minds; there should be integration of hearts. What we are asking for is this. Yes, Jammu and Kashmir is the integral part of India but what about the integration of hearts between the people of Kashmir and the people of India; what about the integration between the Governments, the federal Government and the State Government? There has to be some coherence, there has to be some integration, and there has to be some love and affection. There is some pain, agony, which we are not feeling.

اگر ہوتی تو 32 دن کے بعد اسٹیٹمینٹ مدھیہ پردیش سے نہیں بلکہ اس سدن کے اندر آتا۔ یہ درد یہاں سے، جب دل سے نکلے گا، تو اس کی آواز کشمیر تک پہنچے گی، لیکن اگر زبان سے کہیں گے، تو وہ چہاردیواری میں غائب ہوجائے گا۔

مانیئے چیئرمین صاحب، ہم نے کچھ قدم اٹھائے تھے۔ میں یہ نہیں کہہ سکتا کہ وہ کنکلوژن تک پہنچے۔ مجھے خوشی ہے کہ میں اس وقت چیف منسٹر تھا اور ڈاکٹر منموہن سنگھ جی پرائم منسٹر آف انڈیا تھے، اس وقت تین راؤنڈ ٹیبل کانفرنس ہوئیں اور ان تینوں راؤنڈ ٹیبل کانفرنسز کی صدارت جناب ڈاکٹر منموہن سنگھ جی نے کی۔ پہلی راؤنڈ ٹیبل کانفرنس 25 فروری 2006 کو نئی دہلی میں ہوئی، دوسری دو دن کی راؤنڈ ٹیبل کانفرنس 25-24 مئی 2006 کو سری نگر میں ہوئی اور تیسری راؤنڈ ٹیبل کانفرنس نئی دہلی میں 24 اپریل 2007 کو ہوئی۔ مجھے خوشی ہے کہ سبھی پالیٹیکل پارٹیز، چاہے وہ کانگریس ہے، نیشنل کانفرنس ہے، پی ٹی پی ہے، بی جے پی ہے، سی پی آئی ایم ہے، سی پی آئی ہے، پیوپل ڈیموکریٹک فورم ہے، سماجوادی پارٹی ہے، بی ایس پی ہے، ریجنل ethnic groups لداخ کے ہیں، کارگل کے ہیں، کشمیری پنڈتوں کی تین آرگنائزیشنس ہیں، پنّون کشمیر، کشمیری پنڈت سمیتی، گوجر representatives ، بکروار representatives پہاڑی ریپریزنٹیٹیو، Scheduled caste representatives،

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

سکھ representatives ڈوگرا سبھا، جموں وکشمیر، یہ تمام 65-60 کے قریب لوگوں نے اس میں شرکت کی تھی۔ صرف حریت نے اسے نہیں مانا، باقی ان راؤنڈ ٹیبل کانفرنس میں سبھی گروپ، مذہبی گروپ، پالیٹیکل پارٹیز، ethnic groups تینوں ریجنس نے ان میں شمولیت بڑی اچھی طرح سے کی۔ سر، ان راؤنڈ ٹیبل کانفرنس کے بعد پانچ ورکنگ گروپ بنے اور مجھے یہ کہتے ہوئے خوشی ہے کہ ہمارے آج کے وائس پریزیڈینٹ آف انڈیا اور ہمارے چئیرمین، راجیہ سبھا جناب محمد حامد انصاری صاحب اس Human right commission کے اور confidence building measures across the segments of the society کے بھی چئیرمین تھے۔ سر، اس کے تحت کئی سفارشات آئیں، ان میں سے کئی لاگو ہوئی ہیں اور مجھے یہ کہتے ہوئے خوشی ہے کہ militancy widows کو الگ سے تو نہیں، لیکن جو پیسہ عام widiows کو ملتا ہے، وہ انہیں بھی دیا گیا۔

کشمیری پنڈتوں کے بارے میں یہاں چرچہ ہوتی ہے۔ مجھے یہ کہتے ہوئے خوشی ہے کہ پردھان منتری جی نے جو اسکیم شروع کی اور پیسہ دیا، میرے وقت میں ہی اس سے جموں میں 5,242 فلیٹس بنے اور وہاں hundred percent occupancy ہے۔ ہم نے employees کے لیے کشمیر کے قاضی کنڈ میں 225 فلیٹس، شیخ پورا بڈگام میں 200، پلوامہ میں 60، کپواڑہ میں 60، بارہمولہ میں 125 فلیٹس بنائے۔ پھر کشمیری پنڈتوں کے لیے 300 بنائے۔ ہم نے انہی کے لیے اسپیشلی نوکریاں کیں اور اس کے تحت 1,750 لوگ تبھی ان نوکریوں میں لگے اور وہی وہاں کشمیر میں ٹرانزٹ کیمپس میں رہتے ہیں۔ بعد میں ان کے 900

لوگوں کی بھرتی کے لیے ایک اور advertisement نکالا تھا، لیکن کشمیری پنڈت بھائی آپس میں کورٹ میں چلے گئے۔

اسی طرح سے دوسرے Confidence building measures کے تحت اس وقت شری ایم کے رسگوتر، پرانے فارین سکریٹری کی اگووانی میں strengthening relations across the line of control پر بہت کام ہوا۔ اس وقت کے وزیر اعظم ڈاکٹر منموہن سنگھ جی اور یوپی اے کی چیرپرسن شریمتی سونیا گاندھی اور اس وقت کے مکھیہ منتری جناب مفتی محمد سعید کی موجودگی میں 25 اپریل کو مظفرآباد کے لیے اوڑی سے روڈ سروس شروع کی گئی۔ ان دونوں جگہوں سے ٹریڈ شروع ہو گیا۔ ہم نے اس کو بھی امپلیمینٹ کیا۔

تیسری بات، اکونومک ڈیولپمینٹ کی تھی۔ شری۔ سی۔رنگا راجن جی اس کے چیئرمین تھے۔ اس اکونومک ڈیولپمینٹ میں روڈ، ریلوے، کمیونی کیشن، ڈیزل، ٹورزم وغیرہ کے مدّعے تھے۔ وزیر اعظم نے 22 ٹورزم اتھارٹیز دیں، تب وہ مکمل بھی ہو گئیں۔ ویلی کے اندر تمام ریلوے لائنس بچھائی گئیں۔ مجھے یاد ہے کہ مجھے تین یا چار دفعہ، ڈاکٹر منموہن سنگھ جی کے ساتھ اور یو۔پی۔اے۔ کی چیئرپرسن، سونیا گاندھی جی کے ساتھ جانے کا موقع ملا۔ جموں پرووِنس کے بھی ایک حصے بانیہال تک، بارہمولا سے لیکر بانیہال تک، پوری وادی میں اور جموں کے کچھ حصے تک، ریل سروس شروع کی گئی۔

اسی طرح سے اگر میں insuring good governance کے بارے میں،اس کے لئے اٹھائے گئے بہت سارے قدموں کے بارے میں بتاؤں گا، تو شاید یہاں پر آدھا گھنٹہ لگے گا، لیکن میرے پاس اتنا وقت نہیں ہے۔ ایک رپورٹ، جو بہت sensitive ہے، جس پر پورے سدن میں، پوری پارٹیز کو کام کرنا ہوگا، کیوں کہ

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

وہ کام کسی ایک پارٹی کے بس کا نہیں ہے، that is, strengthening relation between the State and the Centre. اس میں بہت ساری چیزیں ہیں، ان میں democracy, secularism, devolution of power, etc. یہ تمام چیزیں ہیں۔ اس کی رپورٹ تھی۔ اس کے جو چیئرمین تھے، وہ مرحوم (جسٹس) صغیر احمد تھے، He was a retired Supreme Court Judge. Prior to that, he was the Chief Justice of High Court. یہ سبجیکٹ جتنا کومپلیکس تھا، اتنا ہی اس میں وقت لگا۔ وہ رپورٹ 2009،10 میں آئی تھی، تب تک تو یوپی۔اے۔-2 بھی بن گئی تھی۔ میں بھی وہاں سے آیا، لیکن اس میں بھی، ابھی تک کچھ نہیں ہو پایا ہے۔ میرے کہنے کا مطلب ہے کہ اس طرح سے اقدامات اٹھائے گئے۔

یوپی۔اے۔-2 میں، ڈاکٹر منموہن سنگھ جی کی لیڈر شپ میں ایک بہت بڑا کام تھا، جس کو ہم نے بہت فالو اپ کیا تھا۔ کشمیر کے لئے "امید" اسکیم، یعنی آشا، یہ جو اسکیم ہے، جو "امید" اسکیم بنائی گئی۔ It was meant for Women's Self Help Groups. اس میں بہت کام ہوا ہے، 'اڑان' اسکیم، *Udaan* was meant for providing jobs to the educated unemployed. اس اسکیم میں بہت کام ہوا ہے، جے رام رمیش جی، اس کو مانیٹرنگ کرتے تھے، وہ رورل ڈیولپمینٹ منسٹر تھے، "حمایت" *Himayat* was meant for providing jobs to school and college dropouts. اس میں بہت کام ہوا ہے، Then we had the

JKEDI for entrepreneurship development. اس میں بھی بہت کام ہوا ہے۔ یہ بہت ساری چیزیں ہیں۔

ہماری یوپی‌اے-1 اور یوپی‌اے-2 میں بہت سارے confidence-building measures ہوئے۔ ان میں سے کئیوں کو لاگو کیا گیا ہے۔ میں نے شروع میں ہی کہا تھا کہ میں یہ نہیں کہہ سکتا کہ 'سب دودھ کا دودھ اور پانی کا پانی" ہو گیا ہے، کیوں کہ کشمیر کا بڑا کومپلیکس معاملہ ہے۔ یہاں پہلے نمبر پر پالیٹکس آتی ہے، دوسرے نمبر پر اکانومکس آتی ہے اور تیسرے نمبر پر امپلائیمینٹ اور دیگر چیزیں آتی ہیں۔ جہاں ہم امپلائمینٹ پرووائڈ کرنے کی بات کریں گے، جہاں تک ہم سڑکوں اور روڈس کی بات کریں گے، بجلی اور پانی کی بات کریں گے، وہاں اگر ہم وہاں کی پالیٹکس کی بات نہیں کریں گے، تو میرے خیال سے ہم بالکل غلط راستے پر جا رہے ہیں۔ اس لئے ہماری آج کی مانگ کی جو منشا تھی، وہ چاہے میری پارٹی کی رہی ہو یا میرے ساتھیوں کی رہی ہو، وہ یہی منشا تھی کہ کشمیر میں آج 32،33 دنوں سے کرفیو لگا ہے اور ہزاروں لوگ زخمی ہیں، وہ چاہے سیکورٹی فورسیز کے لوگ ہیں، چاہے سویلئنس ہوں۔ ہمیں جہاں سویلئنس کے مرنے اور زخمی ہونے کا دکھ ہے، وہ چاہے بچہ ہو، بہو، بیٹیاں ہوں، عورتیں ہو، بوڑھے ہو یا نوجوان ہوں، ہمیں جتنا ان کے لئے دکھ اور افسوس ہے، اتنا ہی دکھ ار افسوس، ہمارے جو سیکورٹی فورسیز کے لوگ ہیں، ان کے لئے بھی ہے، پھر وہ چاہے جے اینڈ کے پولیس کے ہوں، سی آر پی ایف کے ہوں، آخروہ بھی تو کسی کے بچے ہیں، وہ بھی ہمارے دیش کا حصہ ہیں، ہمارے ملک کا حصہ ہے، ان کو جو کلم دیا گیا ہے، وہ ، وہ کام کرتے ہیں، لیکن

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

جب کبھی وہ لکشمن ریکھا کراس کر دیتے ہیں،، تو اس لکشمن ریکھا کو کراس کرنے پر ان کی ننداا بھی ہوتی ہے۔ سیکورٹی فورسیز کا کام لاء اینڈ آرڈر کو مینٹین کرنے کا ہوتا ہے، لیکن اس میں دونوں طرف سے نقصان ہوتا ہے۔ یہ ٹھیک ہے کہ پبلک کا، سویلئنس کا بہت نقصان ہوا ہے، تب ایسے میں، جب پارلیمنٹ چل رہی ہے تو یہ المیہ بنتا ہے، ضروری بنتا ہے کہ ہم، تمام پالیٹکل پارٹیز، وہ چاہیں وپکش کی پالیٹکل پارٹیز ہوں یا سٹہ دھاری پارٹی ہو، رولنگ پارٹی ہو، ہم سبھی کو ان کے دکھہ اور درد میں شامل ہونا چاہئے۔

اس پورے سدن کو، پارلیمنٹ کو کشمیر کے عوام سے، بچوں سے، نوجوانوں سے ایک اپیل کرنی چاہئے کہ وہ امن اور شانتی بحال کریں، تاکہ ہم سب مل کر ان کی خوشحالی کے لیے، جموں وکشمیر کے لوگوں کی خوشحالی کے لیے، ان بچوں کے مستقبل کے لیے کچھ کرپائیں۔ میرے خیال میں اس طرح کی آواز اس سدن سے جانی چاہئے، اس طرح کی آواز، اس طرح کی اپیل اس پارلیمنٹ سے جانی چاہئے۔ یہ مانگ کرنے کا ہمارا یہی مقصد تھا۔ اس کے ساتھ ہی وہاں آل پارٹی ڈیلی گیشن جانا چاہئے۔ مانیئے گرہ منتری جی وہاں گئے، ٹھیک ہے، آپ ایک دفعہ ہوآئے، لیکن مجھے لگتا ہے کہ آنے والے ہفتے دس دن کے اندر اگر اس کےجانے کا اناؤسمینٹ بھی ہوجائے، تو اچھا ہوگا، کیوں کہ دو دن کے بعد پارلیمنٹ کا سیشن ختم ہوجائے گا، تو سبھی ایم پیز اپنا اپنا پروگرام بنائیں گے، پھر ان کو ڈھونڈھنا مشکل ہوگا۔ آج اور کل کے اندر اگر اسی سدن میں آل پارٹی ڈیلی گیشن کی تاریخ کا اعلان ہوجائے، تو اچھا ہوگا۔ ایک آل پارٹی میٹنگ یہاں بھی ہوجائے، ایک آل پارٹی ڈیلی گیشن کشمیر چلا جائے، یہ ہماری مانگ ہے۔ آپ کا بہت بہت شکریہ جنابِ صدر

श्री शमशेर सिंह मन्हास (जम्मू और कश्मीर): Respected चेयरमैन साहब और सदन में बैठे माननीय सदस्यगण, अभी हमारे विपक्ष के नेता, गुलाम नबी आज़ाद साहब आधे घंटे से ज्यादा बोल रहे थे। बोलते हुए उनका focus एक ही चीज पर था कि प्राइम मिनिस्टर सदन में क्यों नहीं आए। हम कहते हैं कि कश्मीर पर चर्चा हो, कश्मीर इश्यू क्या हे, कश्मीर की बात क्या है, कश्मीर पर कैसे बोलना चाहिए, कश्मीर में क्या होना चाहिए, अगर वे इस पर बात करते, तो बहुत अच्छा होता। मैं भी, गुलाम नबी आज़ाद साहब और डा. कर्ण सिंह जी भी, हम तीनों जम्मू region के रहने वाले हैं। जम्मू की बात किए बिना हम कश्मीर की बात कैसे कर सकते हैं? मैं एक बात अवश्य कहना चाहूँगा कि जब भी हम कश्मीर की बात करते हैं, कश्मीर इश्यू पूरे देश में चलाया जाता है, अगर entirety में देखा जाए, तो जम्मू, कश्मीर और लद्दाख, ये तीन अलग-अलग regions हैं। तीनों का अलग-अलग culture है। तीनों को मिलाकर पूरा जम्मू-कश्मीर बनता है। अगर हम जम्मू की बात न करें, केवल कश्मीर की बात कहें, तो लद्दाख अधूरा रह जाएगा और जम्मू अधूरा रह जाएगा। अगर जम्मू में किसी किस्म की turmoil होती है, तो मैं आपको बता देना चाहता हूँ कि जम्मू एक ऐसा एरिया है, जहाँ 500 किलोमीटर से ज्यादा सीमा पाकिस्तान के साथ लगती है, पाकिस्तान वहाँ पर नित्य प्रतिदिन कोई न कोई वारदात करता रहता है, लेकिन वहाँ पर रहने वाला व्यक्ति, वहाँ पर रहने वाला समाज वहाँ पर किस प्रकार पहरेदारी करता है और कैसे जम्मू और कश्मीर को बचाने का प्रयास करता है।

हम सोचते हैं कि कई बार यहाँ पर हाउस में चर्चा होती है कि unemployment की वजह से कश्मीर में ऐसे हालात हो रहे हैं। मैं आपको बता देना चाहता हूँ कि 55 परसेंट लोग जम्मू में बसते हैं। वहाँ आज भी जम्मू region के 7 लाख से ऊपर नौजवान ऐसे होंगे, जो unemployed होंगे, जो graduation, post-graduation, specialized professional degrees लेकर बैठे होंगे। क्या वे gun नहीं उठा सकते थे? क्या वे आजादी के नारे नहीं लगा सकते थे? यह लड़ाई केवल जम्मू-कश्मीर की नहीं है, बल्कि यह लड़ाई राष्ट्रवाद और अलगाववाद की है। राष्ट्रवाद क्या होना चाहिए, राष्ट्रवाद के प्रति क्या सोच होनी चाहिए? लद्दाख में हमारे हजारों नौजवान होंगे, मगर वहां के नौजवान इस प्रकार के विचार नहीं रखते। उन्होंने हमेशा डिमांड की होगी कि हमें यूनियन टेरिटरी दी जाए और जब से देश आजाद हुआ, तब से ये बातें हो रही हैं, लेकिन उनको आजादी यानी कि यूनियन टेरिटरी नहीं मिली, फिर भी वे देश के साथ जुड़े हुए हैं। हमारे बहुत से मित्र जब इस पर बात करते हैं, तो जम्मू-कश्मीर न कह कर केवल कश्मीर कहते हैं और कहते हैं कि हमें कश्मीर जाना है। वे जम्मू के बारे में अनभिज्ञ होंगे, जम्मू क्या है, लद्दाख क्या है, उसके बारे में बहुत कम जानते होंगे। हमें पहले जम्मू और लद्दाख को भी जानना पड़ेगा। आज वहां जो टर्मोइल है, उसमें कश्मीर या कश्मीरियों के साथ हमें हमदर्दी है, हमें दुख है कि जो कुछ हो रहा है, उसे तो संभालने की जरूरत है, लेकिन कश्मीर के सारे के सारे लोगों का कहें कि वहां पर जो लगभग पचास लाख लोग रहते हैं, वे सारे के सारे इस प्रकार की वारदातें करते होंगे, ऐसा नहीं है। अगर इस प्रकार होता, तो 65 परसेंट लोग जो लोकतंत्र में विश्वास रखते हैं, वे डेमोक्रेसी मे हिस्सा नहीं लेते। उन्होंने इस देश के साथ जुड़ने में हिस्सा लिया है। वे देश के साथ चले हैं, उन्होंने डेमोक्रेसी पर विश्वास किया है। वहां जरूर कुछ लोगों की इस प्रकार की आंख बनी है, इस प्रकार की नजर है। यह सब कैसे हो गया? हम नहीं चाहते थे कि इस प्रकार का हो, हम नहीं चाहते थे कि ये सारी चीज़ें हों। आज कश्मीर की बातें आती रहती हैं, आप सब जानते होंगे। मैं एक बात पूछना चाहता हूँ, आज़ाद साहब, आप मुख्यमंत्री रहे हैं, टोडा में बहुत बड़ा टर्मोइल हुआ था और

[श्री शमशेर सिंह मन्हास]

टोडा के लिए 1994 में भारतीय जनता पार्टी द्वारा एक बहुत बड़ा सत्याग्रह हुआ था कि वहां कैंटोनमेंट बननी चाहिए और वहां के लोकल लोगों को, नौजवानों को बीडीसी कमेटीज बनाकर कहा जाए कि इस उग्रवाद और आतंकवाद से लड़ो। जब तक वहां का लोकल व्यक्ति, स्थानीय व्यक्ति, स्थानीय समाज खड़ा नहीं होगा, तब तक इस प्रकार की वारदातों से दूर नहीं हुआ जा सकता। आज हम कह सकते हैं कि पूरे देश से फौज में जो लोग आए हैं, वे अपने लोग हैं, वे जम्मू-कश्मीर की सीमाओं पर बैठे हुए हैं, जम्मू-कश्मीर को बचाने के लिए शहादत दे रहे हैं। वे तो शहादत दे ही रहे हैं, जिस प्रकार पूरा इंडिया, पूरे भारत का समाज कश्मीर के साथ हमदर्दी रखता है, इस हमदर्दी की वजह से जम्मू-कश्मीर भारत के साथ लगा हुआ है। उनकी भावनाओं के साथ हम कभी भी खिलवाड़ नहीं कर सकते, कभी खिलवाड़ होते हुए देख नहीं सकते, लेकिन हो क्या रहा है? यहां पर नित्य प्रतिदिन अलगाववादी नेता, हिजबुल मुज़ाहिद्दीन के नेता, लश्कर-ए-तैयबा के नेता, जिनकी पूरी आस्था दूसरे स्थानों से है, जो दूसरी जगहों से प्रेरणा लेकर कार्य कर रहे हैं, क्या वे अपनी प्रेरणा के चलते इस समाज को, इस देश को जुड़ने देंगे? मैं चाहता हूँ कि यह हाउस बैठ कर विचार करे, सोचे कि यह जो टर्मोइल खड़ा हुआ है, उसका कारण क्या है और उसकी बारीकियों में जाने का प्रयास करें।

महोदय, जम्मू-कश्मीर आज से नहीं, शायद बहुत से लोगों को पता नहीं होगा, हमारे महाराजा अधिराज डा. कर्ण सिंह जी यहां बैठे हैं, पूरा देश गुलाम था, गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था और 15 अगस्त को आजाद हुआ था, लेकिन जम्मू-कश्मीर कभी गुलाम नहीं रहा। उससे पहले भी जम्मू-कश्मीर गुलाम नहीं था। वहां महाराजा हरि सिंह जी की हुकूमत थी, जो डा. साहब के पिताश्री थे। उन्होंने वहां के समाज को किस प्रकार एक माला में पिरो कर रखा, कैसे पूरे समाज को चलाने का प्रयास किया, कैसे वहां पर डेवलपमेंट हो, उस पर विचार किया? आज हम छुआछूत का मुद्दा लेकर चलते हैं, लेकिन सबसे पहले महाराजा हरि सिंह जी ही थे, जो एक दलित व्यक्ति को अपने साथ लेकर मंदिर में गए और कहा कि तुम मेरे साथ पूजा करो। जब वहां के पुजारी ने कहा कि मैं इसे नहीं आने दूंगा, तब उन्होंने कहा कि मैं पुजारी को उठा कर बाहर फेंक सकता हूँ, लेकिन यह दलित मेरे साथ पूजा करने के लिए जाएगा। जम्मू और कश्मीर वह धरती है। जम्मू का समाज इस प्रकार का है। हमारे महाराजाओं से हमें यह प्रेरणा मिलती है। आप वहां जाएंगे, तो आपको वहां पर कहीं पर भी छुआछूत नहीं दिखेगी। इसका कारण क्या है? इसका कारण यह है कि वहां पर इस प्रकार का संस्कार हमें पुरखों से मिला है। संस्कारों से जुड़ा हुआ वहां का समाज, जीवित संस्कारी समाज कभी यह नहीं चाहेगा कि हम अलग हों। आज हम कश्मीर की बात कर रहे हैं। आज़ाद साहब अच्छी प्रकार से जानते होंगे कि वहां गुज्जर और बक्कर वालों की कोई लड़ाई नहीं है। वहां पर जो पहाड़ी क्षेत्र हैं, वहां पर भी कोई लड़ाई नहीं है। चन्द किते में थोड़ा सा समाज, चंद लोग इस लड़ाई को लड़ना चाहते हैं। वही अलगाववादियों के हाथों खेल रहे हैं।

अगर आप कभी कश्मीर जाएंगे, तो आपको वहां पर सड़कों पर पत्थर नहीं मिलेंगे। पर, आप जानना चाहेंगे कि पत्थर आते कहां से हैं? पत्थर लाने वाले कौन व्यक्ति हैं और इन बच्चों के हाथों में पत्थर देने वाले कौन हैं? इनके द्वारा हजारों रुपए ट्रॉली और ट्रक वालों को दे दिए जाते हैं और उनसे कहा जाता है कि आप रात में सड़कों पर पत्थर फेंक दो। वे सुबह आकर बच्चों को कहते हैं कि ये पत्थर उठा लो, लेकिन उन अलगाववादी नेताओं से एक बार तो पूछा जाए कि जिन बच्चों के हाथों में

12.00 Noon

आज किताब चाहिए, जिन बच्चों के हाथों में आज लैपटॉप चाहिए, देश को आगे बढ़ाने के लिए जिन बच्चों का भविष्य उज्जवल बनाना चाहिए, जिन बच्चों का ऐसा कैरियर बनना चाहिए, ताकि भविष्य में वे अपने पैरों पर खड़े हो सकें, लेकिन आज वे बच्चे यह नहीं कर पा रहे हैं। यह हमारे लिए चिंता का विषय होना चाहिए कि उन बच्चों को कैसे संभाला जाए? लेकिन जब चीजें बढ़ती हैं, तो बढ़ने के बाद लगता है कि वहां पर किस प्रकार की मंशा और किस प्रकार की सोच नित्य प्रतिदिन आगे बढ़ रही है? इस सोच को हमें समझना पड़ेगा।

1947 से लेकर आज तक का सारा लेखा-जोखा देखा जाए। आज जो सलाउद्दीन इनका बहुत बड़ा नेता बना हुआ है, वह कश्मीर से उठ कर वहां पर गया था। शायद आज़ाद साहब जानते होंगे कि 1987 में उसने कश्मीर से चुनाव लड़ा था। वह क्लीन स्वीप था, वह वहां से हार गया था। वह क्यों हारा? उसके पीछे बहुत बड़ी दास्तां है। मैं उस सच्चाई को खोलना नहीं चाहता हूँ। यह जो उग्रवाद पनपा है, यह क्यों पनपा है? यह अलगाववादी नेता आगे बढ़े, तो क्यों बढ़े? उसके कारण को खोजना पड़ेगा।

आज कश्मीर को जिस प्रकार की दलदल में फेंका गया, कश्मीर को आज जिस प्रकार से बढ़ाया जा रहा है... बंधु, मैं आपसे एक निवेदन करना चाहता हूं कि जब भी आप कश्मीर पर विचार करें, तो बात केवल कश्मीर की नहीं, बल्कि जम्मू, कश्मीर और लद्दाख की है। जब से यह सरकार आई है, सबसे पहले, अगर आपने देखा होगा, तो वहां वातावरण बिल्कुल शांत रहा। हमारे मरहूम मुफ्ती साहब वहां इसका नेतृत्व कर रहे थे, वे वहां के मुख्य मंत्री थे। उनकी मंशा हमेशा यह रही कि जम्मू और कश्मीर का विकास कैसे हो, जम्मू और कश्मीर के समाज का उत्थान कैसे हो, जम्मू और कश्मीर के नौजवानों की भलाई कैसे हो, जम्मू और कश्मीर के नौजवानों का कैरियर कैसे बने? इस प्रकार की सोच मरहूम मुफ्ती साहब की थी। वे हमेशा कहते थे कि जब मैं पूर्व प्रधान मंत्री, श्री अटल बिहारी वाजपेयी से मिलता हूँ, तो मुझे हर प्रकार की प्रेरणा के साथ वह सब कुछ मिलता था, जो मैं मांगता था। वे वहां के मुख्य मंत्री थे और अटल जी यहां पर प्रधान मंत्री थे। उस समय उन्होंने विकास की जो राह चुनी और अटल जी ने इंसानियत, जम्हूरियत और कश्मीरियत, तीनों को लेकर जो कहा, पूरी कश्मीरी अवाम उसके साथ खुश थी। वही आवाज़ आज भी हम लेकर जा रहे हैं। कहा जा रहा है कि मध्य प्रदेश से प्रधान मंत्री जी बोले या सदन में नहीं बोले, कम से कम उन्होंने कहा कि मैं वही आवाज़, वही मंशा, वही इच्छा और वही इच्छाशक्ति के साथ चल रहा हूँ, जो अटल जी ने हमें दिखाई थी, मैं अटल जी की राह पर ही चल रहा हूँ।

और वहां के समाज को जिस प्रकार की भी जरूरत होगी, वहां पर समाज को जैसे भी मुझे बचाना होगा, वह बचाने का प्रयास करूंगा। किन्तु वहां क्या हो रहा है कि नित्य प्रतिदिन कोई न कोई ऐसे कारनामे हो रहे हैं, कुछ ऐसी वारदातें हो रही हैं, जिन वारदातों की वजह से ये सारी चीज़ें हो रही हैं। हमने जब से सरकार संभाली है पिछले दो वर्षों में, वहां पर दो एम्स दिए गए हैं, सेंट्रल यूनिवर्सिटी तो ऑलरेडी कांग्रेस के समय थी, लेकिन बहुत बड़ा संघर्ष जम्मू वालों को करना पड़ा था, जिसकी वजह से वह मिला था। अभी परसों ही हमारे प्रकाश जावडेकर जी वहां गए थे और खास करके कश्मीर के आई.आई.टी. कॉलेज के लिए सौ करोड़ कर स्पेशल पैकेज़ देकर आए हैं। तो आप कश्मीर के बारे में क्यों नहीं सोच रहे, कश्मीर के उत्थान के बारे में क्यों नहीं सोचते हैं? वहां आई.आई.एम. बनने जा रहा

[श्री शमशेर सिंह मन्हास]

है और शायद आपको मालूम है, आप सब जानते हैं, मेरे सामने हमारे मित्र, वरिष्ठ नेता बैठे हुए हैं, उनके समय से ही शोरावती में मेडिकल कॉलेज खुला है। उस समय एम्स दूसरी जगह नहीं बनाया जा सकता था, लेकिन उसकी तर्ज पर पी.जी.आई, चंडीगढ़ और दूसरा शोरावती इंस्टीट्यूट वहां पर खोला गया था। वहां पर विकास की राह चली है, क्यों नहीं चली, किन्तु जो बात असत्य है, वह यह है कि जब कभी बात यहां के लोगों के साथ होती है, चर्चा होती है तो वे कहते हैं कि वहां के लोग अनएम्प्लॉइड हैं, इसलिए ये सारी वारदातें कर रहे हैं - ऐसी बात नहीं है। लद्दाख और जम्मू के लोग भी इस प्रकार की आवाज क्यों नहीं उठाते? जो जम्मू को बचाने के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर रहे हैं, और खास कर जम्मू में हमारे फौजियों द्वारा जिस प्रकार शहादत दी गई, केवल फौजी ही नहीं, सी.आर.पी.एफ., बी.एस.एफ. के लोगों ने भी शहादत दी। वहीं दूसरी ओर जम्मू कश्मीर पुलिस की ओर से हजारों के हिसाब से लोगों ने शहादत दी है तथा जम्मू को बचाने का प्रयास किया है। इस प्रकार का प्रयास एक बार नहीं अनेकों बार चलता रहेगा और जम्मू-कश्मीर भारत का मुकुट मणि है, उसके लिए आगे बढ़ने का प्रयास किया जाएगा। अभी 80 हजार करोड़ का पैकेज़ प्रधान मंत्री जी द्वारा यहां पर घोषित हुआ था, वहां पर 34 हजार करोड़ रुपए नेशनल हाईवे के लिए दिए गए थे। खासकर वहां पर एक और बात बताना चाहता हूं कि स्टेट्स को जो सहायता दी जाती है, उसका 14.3 प्रतिशत, यानी सबसे ज्यादा सहायता जम्मू-कश्मीर को दी गई है, ताकि जम्मू-कश्मीर ठीक प्रकार से चले, जम्मू के अवाम को ठीक प्रकार से सुविधा मिल सके। इन सुविधाओं को मिलने के लिए हर प्रकार का प्रयास हो रहा है। वहां पर कई योजनाएं पड़ी हुई हैं। मैं एक बात अवश्य पूछना चाहूंगा कि जो मेरे मित्र सामने बैठे हुए हैं, 1947 से पहले जो वैस्ट पाकिस्तान से आए हुए रिफ्यूजी हैं, आज तक उनको जम्मू-कश्मीर में नागरिकता नहीं मिली - वह क्यों नहीं मिली? न तो वे जम्मू-कश्मीर के बाशिन्दे बन पाए और न वे भारत के बन पाए। वहां पर वे न नौकरी ले सकते हैं और न कॉलेज में पढ़ सकते हैं, न वे स्कूल में पढ़ सकते हैं। वह स्टेट सब्जेक्ट माना जाता है। बताइए आपके पास है या नहीं है? इस मुद्दे का हल आज तक क्यों नहीं किया गया? जबकि नेशनल कान्फ्रेंस ने वहां पर 29 साल 73 दिन सरकार चलाई और 25 साल कांग्रेस के मित्रों ने अपने सहयोगियों के साथ सरकार चलाई होगी। इन 54 वर्षों में क्या किया गया, यह हम सब जानते हैं। इन 54 वर्षों में उसका हल क्यों नहीं हुआ? क्यों नहीं इसका हल निकालने का प्रयास किया गया, अलगाववादियों और राष्ट्रवादियों के बीच में कैसे फर्क नहीं निकाला गया? तीन बार बैठ कर समझौते किए गए। उन समझौतों की वजह से क्यों नहीं सारी बातें हल हुईं? ये हल होनी चाहिए थीं। इसलिए मित्रों, अंत में मैं आपसे इतना ही कहूंगा कि कश्मीर मे केवल चंद लोग बैठे हुए हैं। सारा कश्मीर जल नहीं रहा है, कश्मीर में सारा अवाम खतरे में नहीं है। मैंने जैसे कहा कि गुज्जर, बक्करवाल, पहाड़ी आज भी सिलसिला ठीक प्रकार से चल रहा है, केवल कश्मीर में बैठे हुए चंद लोग हैं, जो अलगाववादियों के इशारे पर चल रहे हैं। उनके इशारों पर चलते हुए ऐसी स्थिति देश के सामने आ रही है। आपके द्वारा भी शायद कई बार उनके सामने टीयर गैस चलती थी, उसके बाद रबर की बुलेट चलती थी, अब पैलेट गन का, जैसे-जैसे आधुनिक युग आता जाएगा, वैसे-वैसे उसी प्रकार की चीज़ें आती हैं। मैं अब तक जो-जो कुछ हुआ है, उसके लिए मैं खुद दर्द महसूस करता हूं। कश्मीरी भाई मेरे अपने हैं, क्योंकि मैं वहाँ का रहने वाला हूँ। कश्मीर अपना है, क्योंकि मैं उसके साथ जुड़ा हुआ हूँ। वह भारत माँ का मुकुट-मणि है और उस मुकुट मणि को कोई भी खराब करे, यह मैं

कदापि सहन नहीं करता। मैं खासकर भारतीय जनता पार्टी की ओर से अपनी भूमि, जम्मू-कश्मीर के लोगों का भला करने के लिए हर समय तत्पर हूं। मैं आप सबसे निवेदन करूँगा कि आप सब भी मिल-बैठकर कश्मीर की इस समस्या को सुलझाने का प्रयास करें, इतना ही मुझे कहना है।

प्रो. राम गोपाल यादव (उत्तर प्रदेश)ः श्रीमान्, मैं आज़ाद साहब और श्री शमशेर सिंह जी को सुन रहा था। कश्मीर की समस्या अब इतनी आसान नहीं रह गई है कि हम वहाँ लोगों को कुछ सुविधाएं दे दें और उस समस्या का निराकरण हो जाए। जिस तरह का जहर वहां के लोगों के मन, दिल और दिमाग में inject किया जा रहा है, उसके चलते चाहे आप वहाँ जितनी सुविधाएँ दें, मुझे नहीं लगता कि उसका निराकरण हो पाएगा, बल्कि उसका जो मूल स्रोत है, जब तक आप वहाँ स्ट्राइक नहीं करेंगे, तब तक कश्मीर में आप कुछ भी नहीं कर सकते हैं। आखिर यह समस्या पैदा क्यों हुई, यह सब जानते हैं। मैं पिछली हिस्ट्री को रिपीट नहीं करना चाहता हूं, लेकिन मैं बहुत संक्षेप में यह जरूर कहना चाहता हूं कि हम लोगों से अतीत में गलतियां हुई हैं और उसका खामियाजा अब सब लोग भुगत रहे हैं। हम समाजवादी शुरू से ही देश के पार्टिशन के विरोध में थे। यह जो विभाजन हुआ, वह भारत के लिए नासूर बन गया। इसका नतीजा यह हुआ कि सन् 1947 से लेकर अब तक कई बार पाकिस्तान से युद्ध हो चुके हैं। हम युद्ध के बाद की स्थिति से भी लाभ उठा सकते थे और पाकिस्तान को इस स्थिति में कर सकते थे कि वह कश्मीर में कोई हरकत न कर सके। ऐसी स्थितियाँ आईं, लेकिन उनको हमने गंवा दिया। देश में 562 देसी रियासतें थीं और वे सब गृह मंत्रालय के अधीन थीं। सरदार पटेल साहब के अधीन जितनी आईं, वे सब ठीक हो गईं। केवल कश्मीर को विदेश मंत्रालय के अंदर रखा गया, जो पंडित जवाहरलाल नेहरू के पास था। युद्ध के बाद इस मामले को यूएनन में रेफर कर दिया गया। यह सबसे बड़ी गलती थी। जब हमारी सेनाएँ Pakistan-occupied Kashmir को वापस लेने के लिए बढ़ रही थीं, तो पंडित जी अगर कुछ दिन और रुक जाते तो जो मुजफ्फराबाद और मीरपुर हैं, वे सब हमारे अधिकार में होते। यह बहुत बड़ी गलती थी, जिसकी सज़ा हम भोग रहे हैं। इसके बाद, सन् 1965 में युद्ध हुआ। आप जानते हैं कि हमारी सेनाएँ लाहौर में इछोगिल नहर के इस तरफ वाले किनारे तक पहुँच गई थीं, जहाँ से रायफल की गोली भी लाहौर में जा सकती थी। हमारी आर्मी सियालकोट के बिल्कुल नजदीक जाकर knock करने लगी थी। हमारी सेनाएँ जैसलमेर वाले इलाके में सारे रेगिस्तानी इलाकों को पार करके लड़कर, मरकर पाकिस्तान के किनारे पहुँच गई थीं। अगर ताशकंद समझौते के जरिए जीती हुई जमीन को वापस नहीं दिया जाता, तो पाकिस्तान की कभी हिम्मत नहीं हो सकती थी, क्योंकि वह जानता था कि एक दिन में लाहौर चला जाएगा, सियालकोट चला जाएगा और इधर वाले हिस्से में भी हिन्दुस्तान की आर्मी आ जाएगी। ये बहुत बड़ी गलतियाँ हमसे हुई हैं।

सन् 1971 के युद्ध के बाद पाकिस्तान के 93,000 सैनिक हमारी कैद में थे, जिन्होंने आत्मसमर्पण किया था। अगर शिमला समझौते में थोड़ी-सी और सख्ती की जाती तो अच्छा होता, क्योंकि उनके लोग हमारे पास इतने बड़े पैमाने पर थे कि हम उनको दबाकर कुछ और ले सकते थे, लेकिन उनको इतनी बड़ी तादाद में छोड़ दिया गया और जो समझौता हुआ, उसका पालन भी पाकिस्तान ने कभी नहीं किया। मैंने जो 1965 की ताशकंद समझौते की बात कही थी, आप जानते हैं कि Gilgit से लेकर यह सारा इलाका, उधर कश्मीर का भी हमारे यहां आ गया था। अगर वह हमारे पास रहता, तो हमारे सैनिकों को Siachen Glacier पर रोजाना मरना नहीं पड़ता, कोई जरूरत नहीं थी। वहां पर हमारी

[प्रो. राम गोपाल यादव]

सेना होती। मुझे याद है, जब मुलायम सिंह यादव जी रक्षा मंत्री थे, मैं 2, कृष्णा मेनन मार्ग पर बैठा हुआ था, तब फारुक अब्दुल्ला साहब के नेतृत्व में कश्मीर के सारे दलों के एम.पी., कांग्रेस, बीजेपी, नेशनल कांफ्रेंस, ये सब आए थे और उन्होंने कहा कि मुलायम सिंह जी, मैं आपको धन्यवाद देने आया हूँ कि 1947 के बाद पहली बार कश्मीर में पिछले चार दिन से हमारे बॉर्डर पर कहीं पर गोली नहीं चल रही है और कोई आदमी नहीं मारा जा रहा है। वह इसलिए, क्योंकि आपको याद होगा, उस वक्त जब वे सियाचिन गए थे, तो वहां पर पाकिस्तान की तरफ से गोलियां चलाई जा रही थीं। उस समय आर्मी के जनरल सिंह साहब थे, तो उनसे रक्षा मंत्री जी ने पूछा कि यह आवाज किस चीज़ की आ रही है। उन्होंने बताया कि पाकिस्तान गोलियां चला रहा है, बमबारी कर रहा है। रक्षा मंत्री ने कहा कि आप क्या देख रहे हैं, आप क्या कर रहे हैं? तब उन्होंने बताया कि हमें यह हुक्म नहीं है कि हम इस तरह से जवाब दें। उन्होंने कहा, "You do whatever you like." उसके बाद फारुक अब्दुल्ला साहब गए थे, क्योंकि हमारी आर्मी ने वैसा किया जो उसे करना चाहिए था। उस समय ये लोग रक्षा मंत्री से मिलने गए थे कि पहली बार ऐसा हुआ है। आज़ाद साहब, आप तो जानते हैं कि कोई दिन ऐसा नहीं जाता है, जब हमारी आर्मी के, सेना के या नागरिक कश्मीर के बॉर्डर पर न मारे जाते हों। यह बहुत सीरियस मामला बन चुका है। प्रश्न यह है कि इतनी गंभीर स्थिति के बाद भी, उनको पाकिस्तान के द्वारा फंडिंग की जा रही है, आई.एस.आई. और वहां की जो टेरेरिस्ट आर्गनाइजेशन्स हैं, वे कश्मीर के लोगों को, खास तौर से नौजवानों को गुमराह करने की कोशिश करती हैं, उनको बरगलाती हैं, उनको तरह-तरह के सपने दिखाती हैं। उनको ट्रेनिंग के लिए उधर ले जाती हैं और फिर अपने ही लोगों पर हमला करने के लिए उनको तैयार करती हैं। असली मामला यह है कि जब तक पाकिस्तान पर नियंत्रण नहीं किया जाएगा, तब तक कश्मीर में शांति बहाल नहीं हो सकती है। आप जानते हैं कि आज भी कश्मीर में सबसे ज्यादा प्रति व्यक्ति मदद दी जाती है, स्पेशल स्टेटस होने के कारण उसको सबसे ज्यादा मदद दी जाती है। आप हिन्दुस्तान के शेष राज्यों को देख लीजिए कि प्रति व्यक्ति के हिसाब से उनको केन्द्र से कितनी मदद मिलती है और दूसरी तरफ कश्मीर को देख लीजिए कि उसको कई गुणा ज्यादा मदद मिलती है। क्या उससे कुछ सॉल्युशन निकला है?

पाकिस्तान की समस्या यह है कि पाकिस्तान की जनता चाहती है कि हिन्दुस्तान से अच्छे संबंध बने रहें, क्योंकि सबके रिश्तेदार दोनों देशों में हैं। मैं जानता हूं, हमारे इटावा के तमाम परिवार ऐसे हैं, जिनका एक भाई यहां है और दूसरा भाई वहां हैं, भाई यहां है, तो बहन वहां पर है। जब संबंध खराब हो जाते हैं, तो सभी दुखी हो जाते हैं, क्योंकि पाकिस्तान में बहन की शादी हो रही है और भाई इटावा में बैठा हुआ है, क्योंकि उसको वीज़ा नहीं मिल रहा है। अगर कोई कार्यक्रम यहां पर हो रहा है, तो वहां से कोई रिश्तेदार नहीं आ पा रहा है। आम पब्लिक यह नहीं चाहती कि दोनों देशों के रिश्ते खराब हों, लेकिन पाकिस्तान की सेना यह चाहती है कि हमारे रिश्ते खराब रहें, ताकि उसका सत्ता पर किसी न किसी तरह से नियंत्रण बना रहे। पाकिस्तान में चाहे प्रधान मंत्री हो या और कोई व्यक्ति हो, उसको वही बोलना पड़ता है, जो वहां की सेना चाहती है, आई.एस.आई. चाहती है। यह स्थिति है। जो लोग पाकिस्तान गए हैं, वे जानते हैं कि पाकिस्तान में आम आदमी की स्थिति बहुत खराब है, लेकिन जो आर्मी से जुड़े हुए लोग हैं या जो उनके रिश्तेदार हैं, उनके मकान भी बहुत अच्छे हैं, उनके पास गाड़ियां बहुत अच्छी हैं, उन पर कोई कानून नहीं चलता है, सारा पैसा उनके पास है और वहां पर आम

आदमी तबाह है। क्योंकि वहां पर political democracy आने के बाद भी, जनता के, लोगों के प्रधान मंत्री और राष्ट्रपति बनने के बाद भी, उनकी कोई चलती नहीं है। यह बिल्कुल सच बात है, इसलिए यह जो समस्या है, यह इतनी गंभीर हो गई है कि पाकिस्तान किसी प्लेटफार्म पर चाहे जो कहे, लेकिन वह हिन्दुस्तान में किसी न किसी रूप में अशांति पैदा करने की कोशिश करेगा। वह कोशिश कर रहा है कि कश्मीर की जनता को पूरी तरह से हिन्दुस्तान के खिलाफ करे, जो हमारा Pak-occupied Kashmir है, वहां एक ऐसी स्थिति पैदा करे, जिसमें उधर से उसकी आर्मी आए और इधर से यहां की जनता उसको सपोर्ट करे। यह strategy पाकिस्तान की है। वह हमारी आर्मी को, हमारी CRPF को बीच में सैंडविच कर देना चाहते हैं। ऐसी स्थिति पैदा करने की कोशिश की जा रही है। इसलिए माननीय गृह मंत्री जी, अब कहना पड़ेगा कि जब तक पाकिस्तान को दुरुस्त नहीं किया जाएगा, कश्मीर का मामला कभी सुलझ नहीं पाएगा। आप कुछ भी करते रहिए, चाहे आप सिद्धांततः की बात कहिए, लेकिन यह मामला कभी नहीं सुलझ पाएगा। सिद्धांत और व्यवहार में बहुत फर्क होता है। सिद्धांतः आप कहिए कि हम वहां AIIMS बनवा रहे हैं, हमने वहां रेलवे लाइन चालू कर दी। उससे क्या फर्क पड़ा, उसके बाद बढ़ा कि नहीं बढ़ा? हर रोज बढ़ रहा है। जब आज़ाद जी चीफ मिनिस्टर थे, तब था, उससे ज्यादा अब हो गया है। आप सुविधाएं दे रहे हैं, सब कुछ कर रहे हैं, लेकिन यह क्यों बढ़ रहा है? पाकिस्तान का टीवी बकायदा कश्मीर में हर घर में देखा जा रहा है। आप उसको नहीं रोक सकते? उसमें क्या दिखाया जाता है, उसमें रोजाना क्या दिखाया जाता है, आतंकवाद को बढ़ावा देने के लिए उनको शहीद घोषित किया जाता है। हमारी फोर्सेज़ ने 10 जुलाई को encounter में एक आतंकवादी को मार दिया। उसके बाद वहां क्या स्थिति हुई, हम सब जानते हैं। वह एक लीडर था, आतंकवादी था, लेकिन उसके पक्ष में जिस तरह से लोग निकले, वह अविश्वसनीय था। आप यह समझिए कि सीमा तक लोगों के मन में भारतीय फोर्सेज़ के खिलाफ, भारती की आर्मी के खिलाफ जहर भर दिया गया। जहां से जहर आता है, उस रास्ते को आप ब्लॉक नहीं करें और केवल यहां ट्रीटमेंट करते रहें, तो वह तो आता रहेगा। आप यहां ट्रीटमेंट करते रहें और जहर को नहीं रोकेंगे, तो ठीक नहीं होगा। आप यह क्यों नहीं कहते कि Pak occupied Kashmir, जिस पर पाकिस्तान ने कब्जा कर लिया था, वह हमारा कश्मीर है। आप उसको हमें वापस कीजिए। आप पाकिस्तान से मांगिए। यहां तत्कालीन सदर-ए-रियासत बैठे हुए हैं। इनकी रियासत थी, इनका राज था, पूरा मुजफ्फराबाद, मीरपुर और सब आपका था, जब एक्सेशन हो गया तो, वह हिन्दुस्तान का है। आप उसको मांगिए, उसको कभी कोई मांगता ही नहीं है और न ही उसकी कोई बात करता है। वे कश्मीर की बात करते हैं और Pak-occupied Kashmir, जो हिन्दुस्तान का हिस्सा है, कश्मीर हमारा अभिन्न अंग है, उसको मांगने की बात क्यों नहीं करते हैं? नेशनल, इंटरनेशनल फोरम पर जब वह इस विषय को उठाता है, तो आप कहिए कि हम तब बात करेंगे, जब वह हमारे हिस्से को वापस करेगा। जब तक यह नहीं होगा और इस तरह का दबाव नहीं बनेगा, बात नहीं बनेगी।

(उपसभापति महोदय *पीठासीन हुए*)

उसने ऐसी स्थिति पैदा कर दी है कि जो Pak-occupied Kashmir है, उसके एक हिस्से को आक्साइचिन चीन को दे दिया और चीन ने वहां आने के लिए सीधा रास्ता बना लिया। हमारी ही जमीन है और वह चीन को दे दी। तो स्थिति इतनी बिगड़ चुकी है कि हर स्टेज़ पर यहां आते हैं और तो यहां भी उसी तरह की बात करते हैं। चाहे हुरियत कॉफ्रेंस हो या कोई और हो इन सभी लोगों को तो हमेशा

[प्रो. राम गोपाल यादव]

समझाने की कोशिश की गई है, मीटिंगें हुईं, वार्ताएं हुईं, लोगों की समझ में भी आ जाता है, लेकिन जो उनके आका पाकिस्तान में बैठे हुए हैं, वे जो आदेश देते हैं, ये उनके हिसाब से काम करते हैं। अब समस्या यह है कि देश को बचाने के लिए कार्रवाई करनी पड़ती है। कहीं आंदोलन होते हैं, तो फोर्स को बल-प्रयोग करना पड़ता है। कल शरद जी ने कहा था और आजा आज़ाद जी ने भी कहा है, यह सही है कि पैलेट गन पर रोक लगनी चाहिए और इसका इस्तेमाल नहीं होना चाहिए। हमारी फोर्सेज़ किसी और तरह का बल प्रयोग कर सकती हैं, उनको वह बल-प्रयोग करना चाहिए। जब बल-प्रयोग की जरूरत पड़ती है, तो करना ही पड़ता है। अगर कश्मीर को हिन्दुस्तान में बनाए रखना है, तो पूरे कश्मीर की सीमा पर चौकसी तो है ही, लेकिन कश्मीर के अंदर जो आतंकवादी गतिविधियां हैं, उनको भी रोकने के लिए कार्रवाई करनी पड़ेगी। उनके खिलाफ बल प्रयोग करना मजबूरी भी है। उस स्थिति में अगर मैं न भी चाहूं और यह कहूं कि हमारी फोर्स बल-प्रयोग नहीं करेगी, तो इसके यह मायने हैं कि आप कहना चाहते हैं कि पाकिस्तान को यह कश्मीर दे दीजिए। मैंने कहीं पढ़ा है, एक सर्वे में यह कहा गया कि अभी 2014 का चुनाव हो गया, जब इतना भारी voter's turnout हुआ तो उम्मीद थी कि इसकी वजह से लोग यह समझेंगे कि उनका झुकाव डेमोक्रेटिक सिस्टम में है और हिन्दुस्तान के प्रति है, लेकिन घाटी के कुछ जिलों में जो सर्वे हुआ, उसमें आया कि 75 per cent से लेकर 95 per cent तक लोग हिन्दुस्तान में नहीं रहना चाहते, यह स्थिति क्यों आई, जबकि कश्मीर के लोगों को सारी सहूलियतें देने की कोशिश की गई। इसलिए जो चीज निरंतर दिमाग में भर दी जाती हैं, दिमाग से आदमी गाइड होता है। अगर दिल और दिमाग, दोनों में जहर भर दिया जाए, तो फिर वह बच नहीं सकता है। इसका यह कारण है, इसलिए मैंने शुरू में कहा था कि जो रूट है, जो source of poisoning है, जब तक उस पर स्ट्राइक नहीं करेंगे, कश्मीर के लोगों के मन को प्रदूषित करने वाली बातों के मूल स्रोत पर स्ट्राइक नहीं करेंगे-जो स्रोत पाकिस्तान है-तब तक हम कश्मीर में शांति बहाल नहीं कर सकते हैं। ...**(समय की घंटी)**... इसलिए जिस तरीके से हो, आप बेहतर जानते हैं, क्योंकि आप सरकार में बैठे हुए हैं। आप जानते हैं कि किस तरह से करना चाहिए। आपको देश को बचाने के लिए प्रयास करना चाहिए। बहुत-बहुत धन्यवाद।

SHRI A. NAVANEETHAKRISHNAN (Tamil Nadu): Thank you hon. Deputy Chairman. I thank Amma. Please listen to me. *"Kashmir, beautiful Kashmir; Kashmir, wonderful Kashmir."* Sir, this is a popular song in one of the films acted by Dr. Puratchi Thalaivar MGR. I again repeat it, *"Kashmir, beautiful Kashmir; Kashmir, wonderful Kashmir."*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Why don't you sing the entire song?

SHRI A. NAVANEETHAKRISHNAN: My senior colleague, Dr. Maitreyan, will be able to sing it fully.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I can allow him, if he is ready. Maitreyan, would you like to try?

SHRI A. NAVANEETHAKRISHNAN: Tamil films, acted by MGR or any other

actor, are very, very popular, but the shooting should have taken place in Kashmir. Any film, which has been shot in Kashmir, is very, very popular in Tamil Nadu.

Sir, I would like to make it very clear that from Kashmir to Kanyakumari, India is one. I too belong to Kashmir and Kashmir belongs to me. Here, I would like to reveal one secret. There is a product, which, in English, is called 'saffron', in Tamil, we call it *korosanai.* The Kashmir's saffron is considered to be very good. In Tamil Nadu, every would-be-mother is given saffron because they want a beautiful child. My mother had it, my daughter-in-law had it, my granddaughter will also definitely have it. So, I am proud to say that I belong to Kashmir. After seeing the movies, shot in Kashmir, I wanted to visit Kashmir. And, my this wish was fulfilled when I was in the Public Service Commission. I thank our Chief Minister, Amma, because I was able to visit Kashmir only because of her. Then, as a State guest, I visited many places and temples. I was provided with very good food. I enjoyed it very much. I belong to Thanjavur, in the Cauvery Basin, and so, I was under the wrong impression that Thanjavur was the only fertile land in India. But, I changed my opinion after seeing the agricultural land in Kashmir. Also, the people of Kashmir are very, very nice. I can really quote the names of the Leader of the Opposition, Shri Ghulam Nabi Azad, and the senior leader, Dr. Karan Singh. They show real concern for the development of Tamil Nadu. There is no doubt about it. Dr. Karan Singh is familiar with each and every part of Tamil Nadu. Also, he knows Tamil Nadu's culture and its social fabric. He knows everything about Tamil Nadu. I take this opportunity to thank the Leader of the Opposition, Shri Ghulam Nabi Azad, and Dr. Karan Singh because they had exhibited real concern for the people of Tamil Nadu when our *Amma* was in certain trouble. So, I thank them. In India, everybody feels that he belongs to every part of India.

As a student, I went to AVVM College, Poondi. We used to start from Thanjavur Punnainallur Mariamman Koil, Nagur Dargah and Velankanni Church. We offer prayers in churches, in mosques, in temples. Prof. Ram Gopal Yadav has rightly said that there are no differences amongst the people. The problem lies somewhere else. We must find out as to where the problem lies and, then, should endeavour to remove that problem. That is the only solution. Our hon. Chief Minister, *Amma*, is known for maintaining the integrity of India. The people of Kashmir love Tamil Nadu very much. As an Advocate General, I had an opportunity of being a host for more than fifteen judges and their families, when they visited Chennai. They wanted to visit Marina Beach, Mahabalipuram, Pondicherry. They are fond of seeing the sea. I had arranged all the tours. They had felt very obliged. And, they are still in touch with me. From Chennai High Court also two Judges — the Chief Justice and a very senior Judge — had visited Kashmir. So, there is no difference

[Shri A. Navaneethakrishnan]

between Tamil Nadu and Kashmir. The people of Tamil Nadu pray for a beautiful and peaceful Kashmir. That is also the wish of our hon. Chief Minister, *Amma.* I pray to God for putting an end to terrorism in Kashmir. I thank everybody for having given me this opportunity to speak here.

SHRI DEREK O'BRIEN (West Bengal): Mr. Deputy Chairman, Sir, before I say even one word about the incidents in the last one month, which have happened, or, the discussions we have had—we have a lot to say about it — let me make one message loud and clear, and, that is not for anybody in this House. I must tell our friends in Pakistan, straight talk, "Please do not meddle in our internal affairs; please do not shed crocodile tears; please do not pretend that you have love for the people of Kashmir; please do not give my country any bogus lectures on pluralism and democracy; and, please do not give us *bhashan* from your Generals, your politicians and your establishment, because my family knows Pakistan and my family knows India." Sir, in 1947, my grandfather worked in Kolkata and his younger brother worked close to Kolkata. So, the two brothers were in Kolkata and one brother was in Lahore, and he chose to stay in Lahore. That is one-third of the family and two-thirds of the family are here, the O'Briens. Today, in spite of all our differences, in spite of all the problems which we face today, we are still the O'Briens of India. We can eat what we want, we can pray wherever we want to, we can walk the streets freely, but the O'Briens of Pakistan don't exist any more. This is a fact, Sir. Yes, there are differences. In the last two years, there have been very serious issues. Sometimes, words cannot solve these issues. I wanted to start with the history and, then, come to the present, but, I think, I should start with the present and, then, go backwards in time. So, let me start with yesterday. In Trinamool Congress, when it comes to matters of Foreign Policy, as our own Policy, —whether it is the past; for the last 18 years we have been a party — we have always been with the Government, in the sense we are always with the country. This is not about winning any political points. Sir, yesterday, it was said by the hon. Prime Minister that if those boys and girls had books in their hands, or, laptops in their hands, or, cricket bats in their hands, it would have been better than having stones. Sir, that Statement also concerns me, but my concern is that even if those young boys had laptops, or, books, or, cricket bats, they would have still thrown it at where they wanted to throw it. This is a matter of concern, Sir. So, we need to understand this situation better. Sir, it is one thing that when you are sitting in the Opposition, then, you want to play rambo; but, it is another thing when you come here in the Government. When you come here in Government, you have to have peace and serenity in the Government. Actually, Ram Gopalji, the Professor, has said before about the history which I wanted to say. I will not

go into the history. But, Ram Gopalji, whatever you said on the history, I am completely on the same page as you, as to what you said about whose role, and I do not want to mention too many names here, because people get touchy when you mention names. Sir, this is a human tragedy. This is a tragedy of common people. Who would know Zohra Farooq? She is five-years-old, Sir. What she said in Urdu was translated into English. She said, "We don't burn firecrackers at home, but they now burn firecrackers." This was said by a five-year-old girl. Now, Sir, who is a nationalist and who is a patriot? The nationalist loves his country; the patriot loves the people of this country. It is very important, Sir, at this stage not to make a distinction between Kashmir, the Lion, and Kashmir, the people. This is important, Sir. This is above politics; so, please don't get touchy. Interestingly, a few days ago, there was a speech in the Lok Sabha on behalf of the Government, and I was intrigued to know whose voice it was, who spoke in the Lok Sabha because his views on Kashmir 20-25 years ago and today are different. Maybe, it is a very nice view; it is a good view and it is often criticized as being a view because he is a Muslim. Sir, I need to bring this point out today because he — this gentleman — believed that Sardar Patelji also had some views on Kashmir and even Shri Shyama Prasad Mukherjee was a stumbling block. Sir, I welcome the person the BJP chose to speak that day in Parliament. Maybe, today, it is the BJP and the NDA who are taking a different look at Kashmir. The person who said all these words — last week only — was Mr. M.J. Akbar. Now, Mr. M.J. Akbar is a friend of mine. So, I don't want to embarrass him and this is not the occasion to embarrass anyone. But if the BJP is looking at somebody like Mr. M.J. Akbar who wrote that book on Kashmir — and I am not here to publicize his book because he is your Minister; it was called 'Kashmir behind the Vale' we want to hear voices like this, and the more we hear voices like this, the more we believe that there will be a chance to solve this issue. It is another matter that when this book was launched in 1992, there were many in your Party who threatened to burn the book.

Sir, let us move on to the Home Ministry. In regard to the Home Ministry today — some of my colleagues are here who are in the Committee with me — there is a meeting called today at 3 o'clock, and, for that meeting, we have been given some background details from the Home Ministry. Now, the Home Ministry has given us the details of the use of pellet guns and I am reading from that report. It says, "In 2010, there were six deaths and 198 injuries and, in 2016, there are three deaths and 78 injuries or 58 injuries." Sir, we have to go beyond these statistics. Otherwise, for the last 70 years, we have gone this way and that way. We need to go beyond these statistics because the more and more I am looking at this, I find there are other examples of this happened in 2008-09; that was the number and now the number is less. Sir, we have to come out of this mentality because

[Shri Derek O'Brien]

unless we come out of this mentality, we will continue to suffer. It is almost like saying, 'There are a few injuries now. So, we have committed a smaller sin.' Sir, it is much beyond that. It is much beyond that. Sir, there is a difference in Kashmir. I was trying to study this in the last two-three days. And what is the big difference in Kashmir? Let us see it even in the last ten years. I don't want to go before that. Sir, I want to make one point in two minutes about what, I think, has changed 'on the ground' in Kashmir. Actually, to use the expression 'on the ground' is incorrect. Sir, in 2011, five-six years ago, the Internet penetration in Kashmir was three per cent. Today, the Internet penetration in Kashmir is almost 25 per cent. Sir, that is a major change that has happened in Kashmir. Today, if you ask me, why the Hurriyat or anyone else doesn't have control over these people, nor do the security forces, it is because how you could have an encounter with YouTube. You can't. The opinion is being made on the Internet. So, Mr. Home Minister, Sir, what saddens me also is, you Tweet out on July the 9th. It is a good Tweet. I quote, "I appeal to the people of Jammu and Kashmir to remain calm and maintain peace. The Centre is working with the State Government." Excellent. But the problem is that when this Tweet went out, the Internet itself was blocked. So, it is a tough call. In fact, in Kashmir, the Internet has been blocked about 13-14 times and I understand if you think so sometimes but that is not the solution. You are not going to get young people in your side if you keep blocking the Internet. The only other State which has blocked it close to 9 times in the last two-three years is a Western Indian State. ...*(Interruptions)*...

AN HON. MEMBER: Gujarat.

SHRI DEREK O' BRIEN: You said it. ...*(Interruptions)*... So, I am also saying it, Sir, because it is a fact. Sir, 'India' is non-negotiable. The 'Indian' is also non-negotiable. Sir, Kashmir is also non-negotiable. But the 'Kashmiri' and his/her welfare also have to be non-negotiable.

Sir, I now come to the issue which started all this — Burhan Wani. Now, Burhan Wani's is the same issue — I am going back to the Internet — because Burhan Wani, thankfully more dangerous on the Internet than he was on the streets. I believe, Burhan Wani is more dangerous in his grave than he was in his living room! And Burhan Wani may be more dangerous dead than he was alive. So, Sir, this is the changing situation in Kashmir. I am not going into the Home Ministry numbers, and we must restrain ourselves. We are a young Party, 18 years old. So, when we are telling the Congress and the BJP, the national parties, to do this, we are saying this with all humility.

Sir, this needs to be done. I want to make a specific recommendation to the Home Minister. You have said that there are four-five different kinds of pellets. I don't want to make this into a pellet discussion. You have asked for two months for that Expert Committee report. Two months is a long time for this. There is enough technology available. Why two months, Sir? Make it two days, make it one week, and let us have that Expert Committee come out with the report, because those pellets are hurting. They are not only hurting the children, but they are also hurting the consciousness of Kashmir.

Sir, I have never tried this before, but I would try it only once. These pellets, I do believe, are hurting the children and also the consciousness of Kashmir. So, I will end with an Urdu couplet.

"एक दो जगह नहीं सारा बदन छलनी है।
दर्द बेचारा परेशां है, किधर से उठे।।"

श्री शरद यादवः माननीय उपसभापति जी, मुझ से पहले बहुत से माननीय सदस्यों ने अपने विचार रखे। गुलाम नबी साहब, राम गोपाल जी से लेकर देरेक साहब तक, सबने जो बातें कहीं, मेरा मानना है कि इन सबकी कही हुई बातें रिकॉर्ड पर आ चुकी हैं, इसलिए मुझे अब इससे आगे कुछ बोलने की जरूरत है।

इस देश में तमिलनाडु में, अम्मा के सूबे में, Periyar से लेकर Annadurai तक कितना बड़ा आंदोलन, Laldenga था। दिग्विजय सिंह जी अभी यहां नहीं हैं, लेकिन मुझे याद है कि बीस बरस तक छत्तीसगढ़ में भंजदेव हर साल झंडा लहराते थे और अपनी आजादी घोषित कर देते थे। यही हाल पंजाब में हुआ, हम सब लोग यहां हैं। पंजाब में कितने समय तक और कितने बड़े पैमाने पर, खालिस्तान के नाम पर कितने तनाव हुए कितनी मुश्किलें आईं, लेकिन पहले के लोगों ने, पहले के सदन ने इन सारी समस्याओं को ठीक से पार करने का काम किया, उनका निदान करने का काम किया।

आज जो समस्या हमारे सामने है, हमें उसका भी निदान करना पड़ेगा। इसके लिए कितनी ही कमेटियां बनी हैं, यहां पूर्व प्रधान मंत्री, डा. मनमोहन सिंह जी बैठे हुए हैं, इन्होंने जम्मू-कश्मीर में गोलमेज़ कॉन्फ्रेंस करवाई थी। मैं उन सब बातों को नहीं दोहराऊंगा, लेकिन उस समय तीन-चार कमेटियां बनी थीं। इस सदन के सभापति, हामिद अंसारी साहब की सदारत में भी एक कमेटी बनी थी। उस समय जम्मू-कश्मीर की ऐसी कोई पार्टी नहीं थी, ऐसा कोई हिस्सा नहीं था, जिसका उस कमेटी में प्रतिनिधित्व न रहा हो। धार्मिक से लेकर सब तरह के लोगों की आम सहमति से उस कमेटी के द्वारा छः मुख्य बिन्दुओं को लिया गया। अगर मैं उन सबको पढ़ने का काम करूंगा, तो बहुत लम्बा समय लग जाएगा और मेरे पास उतना समय नहीं है। उनका शीर्षक था, "Confidence Building Measures Across Segments of Society in the State."

इस वर्किंग ग्रुप में जम्मू-कश्मीर से वास्ता रखने वाली सभी पार्टीज़ और सब तरह के धार्मिक संगठनों के लोग थे। हां, मैं यह मानता हूं कि हुर्रियत उस समय सहमति में नहीं थी।

[श्री शरद यादव]

एक रंगराजन कमेटी थी, जो economic matters पर बनी थी। मैं इनका जिक्र इसलिए कर रहा हूं कि ये सब चीज़ें पहले हो चुकी हैं और आज हम लोग फिर से पुराने इतिहास पर खड़े हैं। चाहे कोई भी सरकार रही हो, अटल जी की सरकार रही हो, मनमोहन सिंह जी की सरकार रही हो या नरेन्द्र मोदी जी की सरकार हो, ये जितने भी प्रयास हैं, ये पहले से किए जाते रहे हैं। सरकारें आती हैं, जाती हैं, लेकिन उनके जो प्रयास हैं, वे हमेशा जारी रहे हैं। चाहे जम्मू-कश्मीर की समस्या हो अथवा देश के दूसरे हिस्से से संबंधित समस्या हो, उन समस्याओं के समाधान के जो रास्ते बने हैं, वे हमेशा हमें एक राह, एक रास्ता दिखाते रहे हैं। हमें उनको खोजना चाहिए।

महोदय, मैं माननीय गृह मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि हमारे जो सभापति जी हैं, हामिद अंसारी साहब, वे स्वयं उस कमेटी में थे। उस कमेटी में कोई मामूली लोगों के दस्तखत नहीं हैं। अभी माननीय सदस्य उन सब लोगों के नामों को पढ़ रहे थे। रात को मैं देख रहा था कि ऐसा कोई सेक्शन या कोई हिस्सा नहीं है, जिस पर उनके दस्तखत न हुए हों। बीजेपी के श्री चमनलाल गुप्ता जी, जो उस समय हमारे सहयोगी थे, उनके दस्तखत भी उसमें थे। आज के डिप्टी सीएम भी उसी कॉन्फ्रेंस में थे। ये सब उस कमेटी की बातों पर सहमति देने वाले, दस्तखत करने वाले लोग थे।

रंगराजन साहब यहीं हैं, ये मुख्य मंत्री रहे हैं, फिर यहां कर्ण सिंह जी भी बैठे हैं। मैं आपसे निवेदन करूंगा कि हम सबने देश में कई बड़े-बड़े सवाल हल किए हैं और अब यह सवाल भी हमको ही हल करना पड़ेगा। प्रधान मंत्री जी ने बोला कि हिन्दुस्तान कश्मीर को बहुत प्यार और मोहब्बत करता है, यह सही बात है, लेकिन यह भी जरूरी है कि वहां के लोग भी हमसे मोहब्बत करें, प्यार करें। देश दोतरफा मोहब्बत से बनता है और दोतरफा मोहब्बत से आगे बढ़ता है। इन्हीं कमेटियों में हमने यह फैसला किया था कि कश्मीर के जो नौजवान हैं, वे बड़े पैमाने पर पूरे देश में पढ़ाई करेंगे और हम उनको पूरे देश की यूनिवर्सिटीज़ में लाकर एजुकेशन देंगे।

उपसभापति जी, मैं आपके माध्यम से माननीय गृह मंत्री जी से यह पूछना चाहता हूं कि इस फैसले के बाद कितने बड़े पैमाने पर नौजवान यहां की सारी यूनिवर्सिटीज़ में आए हुए थे? इन यूनिवर्सिटीज़ में आज कितने नौजवान रह गए है और कितने वापस चले गए हैं? मेरा निवेदन है कि आप मेरे इस प्रश्न का जवाब देने का काम जरूर करें।

यहां मैं किसी की राय से सहमत नहीं हो सकता। कश्मीर के लोगों के साथ बराबरी का सलूक करके ही आप हिन्दुस्तान में कश्मीर को रख सकते हैं और कश्मीर के लोगों के दिलों को, उनके मनों को जीत सकते हैं। आज जो स्थिति है, उसमें जिस तरह से लोग बातें कर रहे हैं, उस तरह से इस समस्या का रास्ता नहीं निकलेगा। युद्ध से आपका कोई रास्ता नहीं निकल सकता। एक मौका था, जब आप युद्ध में जीते थे, लेकिन आज युद्ध का मामला नहीं है। आपके और पाकिस्तान के बीच में युद्ध हो ही नहीं सकता है, आप करके देख लेना, दोनों जगह बरबादी हो जाएगी। आज वे हालात नहीं हैं। आज ऐसे हालात हैं कि हमें कश्मीर के लोगों को जीतना होगा। इस तरह कई बार वे जीत गए हैं, हमने कई बार उनको मोहब्बत से अपने साथ लिया है। 1947 में जब कबाइली आए थे, उस समय जम्मू-कश्मीर की जो सियासत थी, उससे उनका समझौता ठीक से नहीं हो पा रहा था। कबाइलियों के आने के साथ

ही एक बड़ा फैसला हुआ और उस विकट परिस्थिति में हमने जम्मू-कश्मीर को बचाने का काम किया। आज सरदार पटेल हमारे बीच में नहीं हैं। मैं मानता हूं कि हिन्दुस्तान में जितना सरदार पटेल ने हिंदुस्तान की एकता के लिए काम किया, वैसे सबने किया, लेकिन उनको जमीनी समझ बहुत थी और उसमें से रास्ता निकालने में वे अपनी तरह के एक अद्भुत इंसान थे। मैंने पंजाब का जिक्र किया। अभी पूरा रेड कॉरिडोर बना हुआ है। हम जूझ रहे हैं या नहीं जूझ रहे हैं? देश को एक रखना है, तो जूझना पड़ेगा। मनमोहन सिंह जी के जमाने में, अटल जी के जमाने में, उसके पहले के जितने प्रयास हैं, मैं आपके माध्यम से होम मिनिस्टर साहब से कहना चाहूंगा कि आप उन सारी चीज़ों को निकालने का काम करें। मेरे पास सारे पेपर्स हैं, आप कहेंगे तो मैं आपके पास कल पहुंचा दूंगा, जितने भी पुराने-पुराने समझौते हैं, वे मेरे पास हैं। आज मुझे मालूम नहीं था कि मौका मिल जाएगा, नहीं तो मैं उनको लेकर आता। आप कहेंगे तो ये सारे पेपर्स, सारी चीजें, सभी वर्किंग ग्रुप्स के जितने भी प्रयास हैं, पेपर्स हैं, आपके पास पहुंचाने का काम करूंगा।

श्री सीताराम येचुरी (पश्चिमी बंगाल): हम लाए हैं। चाहिए, तो दे दें।

श्री शरद यादवः देने चाहिए। मैं इन्हीं की चर्चा कर रहा था, ये मेरे पास थे। ये सब होम मिनिस्ट्री में होंगे। वे पेपर्स किस लिए हैं? वे हमारी सारी सरकारों के अथक प्रयास हैं। मुझे अच्छी तरह याद है, अटल जी के जमाने में हुर्रियत के लोग मिले थे और हुर्रियत के लोगों के साथ सारे संवाद को आडवाणी जी के जिम्मे छोड़ा गया था।

महोदय, मैं आपसे निवेदन करूंगा कि अभी एक-डेढ़ वर्ष पहले ही कश्मीर में 70 फीसदी, 65 फीसदी लोगों ने वोटिंग में हिस्सा लिया है। यह हम क्यों भूल जाते हैं? यह वहां का सच है और हमारे हक में है। जो फैसला वहां कश्मीर के लोगों ने, घाटी के लोगों ने किया है, उसको हम मोहब्बत से क्यों नहीं देखते हैं? आज वहां की जनता में कुछ रंज और अफसोस है और वह हमसे दूर जा रही है। वैसे कई जगहों पर लोग दूर गए हैं, लेकिन देश ने उनको वापस लाने का काम किया है। हमें भी यही प्रयास करना पड़ेगा, इसके सिवाय कोई दूसरा रास्ता नहीं है। गोली से कोई समाधान नहीं होना है। मैं गृह मंत्री जी से बहुत विनम्रता से कहना चाहता हूँ कि यह जो पेलेट गन है, उसके लिए आपने कमेटी बना दी है, लेकिन वहां के लोग उनमें नहीं हैं, हो सकता है, गड़बड़ है, बहुत से लोग काम कर रहे होंगे, लेकिन वे हमारे ही लोग हैं, अगर घर में बेटा या बेटी विद्रोह कर जाते हैं, तो उसको हम वापस लाने के लिए अच्छा सलूक करते हैं या नहीं करते? हम कहते हैं कि कश्मीर हमारा है, कश्मीर हमारा अभिन्न अंग है। मैं कहता हूँ कि अभिन्न अंग है, तो पेलेट गन देश के बाकी किसी इलाके में क्यों नहीं चली? यह जो हरियाणा है, यहां क्या नहीं हो गया, लेकिन हमने वहां पेलेट गन नहीं चलाई। आज साइंस इतना एडवांस हो गई है, सारी चीज़ें बहुत एडवांस हो गई हैं, मैं इस सदन के माध्यम से आपसे विनती करूंगा कि आप तत्काल कोई दूसरा रास्ता निकालिए। आप लोगों को गोली मार दीजिए, लेकिन पेलेट गन ठीक नहीं है। मैं यह मानता हूं कि किसी कीमत पर किसी पर गोली नहीं चलनी चाहिए, लेकिन यह गोली से भी खराब है। इसके कारण हर वह इंसान घिसट-घिसट कर जिएगा। इसको आप तत्काल वापस लीजिए। यह तो इंसान को मारने से भी बुरा अपराध है। जो वहां के लगभग 60-70 लोगों की आंखें चली गई हैं, छोटे बच्चों की आंखें चली गई हैं। वहां लोगों ने पत्थर जरूर उठाए हैं और मैं मानता हूं कि फौज के लोग, पुलिस के लोग, पैरामिलिट्री के लोग बड़े पैमाने पर शहादत दे रहे हैं, मगर देश के

[श्री शरद यादव]

ही दो बेटे लड़ कर जान दे रहे हैं, क्योंकि उस तरफ के लोग जो जा रहे हैं वे भी हमारे हैं और इस तरफ के लोग जो जा रहे हैं वे भी हमारे हैं। जम्मू-कश्मीर से एक माननीय सदस्य बोल रहे थे, मैं मानता हूँ कि वहां की संस्कृति और तहज़ीब हिंदुस्तान के बाकी इलाकों से बहुत आगे थी। लेकिन आज जो हालात बिगड़े हुए हैं, आज तो हालात गंभीर हैं। अगर ये गंभीर सवाल हैं, तो इन सवालों के लिए आप पहल तो कीजिए। आज सदन से यह प्रस्ताव जाना चाहिए, वहां की जनता से हम लोग यहां से विनती करें कि हम सब लोग आपके साथ सब तरह के दुख और सुख को साझा करने के लिए तैयार हैं। वहां आज खाना नहीं है, नाश्ता नहीं है, रोजगार नहीं है, वहां सब कुछ बंद पड़ा हुआ है। आज पूरे कश्मीर की बहुत बुरी हालत है। वहां 32 दिनों से कर्फ्यू है। ऐसे में जो daily कमाता है, जिसको हम अंतिम आदमी कहते हैं, हम रोज सोचते हैं कि हम अंतिम आदमी की जिंदगी बदलनी चाहिए। जो दिहाड़ी मजदूर हैं, उनको दिन भर काम करना पड़ता है, तब कहीं उनकी जिंदगी चलती है। आज वे घर बैठे हुए हैं। पहले यह सिर्फ कस्बों में होता था, लेकिन अब यह गांव तक चला गया है, इसलिए हमारे सामने बड़ी चुनौती है। इस बड़ी चुनौती पर हम सब लोगों को गंभीरता से सोचना चाहिए कि ये हमारे लोग हैं, वे हमसे गुस्सा जरूर हैं, लेकिन हमें उनके साथ मोहब्बत के साथ पेश आना चाहिए, उन्हें मोहब्बत से वापस लाना चाहिए। यदि हम यह काम नहीं करेंगे, तो हमें इतिहास माफ नहीं करेगा।

हमारे पुरखों ने हमें राष्ट्र की एकता और अखंडता की विरासत सौंपी है। यह हमारे ऊपर जिम्मेदारी है। ...*(समय की घंटी)*... यह हमारा फर्ज है, यह पूरी तरह से सारे देश का जनमानस है कि चाहे जितनी.... वे हमारे पास आए थे, वोट डाल कर आए थे, आज वे हमसे दूर हो गए हैं, लेकिन वे हमारे पास भी आए थे। हमें उनके पास आने की बात को नहीं भूलना चाहिए, दूर जाने की बात को भी सहेज करके, तरीके से करना चाहिए। फौज और पुलिस बल से इसको नहीं करना चाहिए। यह सही है कि फौज और पुलिस बल का इस्तेमाल करना पड़ता है, कई बार करना पड़ता है। हमने पंजाब में भी किया, यहां भी करना पड़ेगा, लेकिन इसका प्रयोग एक सीमा तक ही करना चाहिए। मानवीय दृष्टि से उस सीमा तक restrain करके लोगों को आगे बढ़ाने का काम करना चाहिए। मैं फिर कहना चाहता हूँ कि यहां जम्मू और कश्मीर के दो सदस्य हैं, वे चुने हुए प्रतिनिधि हैं, जम्मू के सदस्य बोल चुके हैं, समय हो या न हो, लेकिन इन दोनों सदस्यों को यहां पर बोलने का मौका मिलना चाहिए। यहां पूरे दिल से अपनी बात कहने का मौका सबको देना चाहिए और सबको सुनना चाहिए। मैं आपसे यह विनती करता हूँ कि इन दोनों सदस्यों को बोलने का मौका दिया जाए। सदन से प्रस्ताव पास करके पूरे घाटी के लोगों से, जम्मू और लद्दाख के लोगों से अपील करनी चाहिए कि हम सब आपके दुख और तकलीफ में साथ हैं। आपकी तरफ से इस तरह की बढ़िया अपील जाए और इसलिए जाए, क्योंकि सभापति को भी कश्मीर के मामले में बहुत अनुभव है, वे उसके अध्यक्ष थे। इन्हीं बातों के साथ मैं इतना ही कहना चाहता हूँ कि मैंने जो बातें कहीं, अपनी बातें भी कही हैं, लेकिन मेरे दिल में पूरी तरह से राष्ट्र की एकता का जो मन है, वही बेचैन करके मुझसे बुलवा रहा है। सरकार के साथ हम सब लोग हैं। आप प्रयास कीजिए, हम सब लोग आपके साथ हैं। आप कश्मीर को ठीक बनाइए, वहां के जो लोग दूर चले गए हैं, उनको पास लाइए। आप इसके लिए हर तरह का प्रयास कीजिए। हम चाहते हैं कि हम आपके साथ सहयोग करके चलें, लेकिन पूरा सदन आपके साथ है, पूरा देश आपके साथ है। उसी जिम्मेदारी के साथ आप घाटी के लोगों के साथ भी व्यवहार कीजिए और उनको वापस लाने की कोशिश कीजिए। वे हमारे लोग हैं, अगर वे गुस्सा भी हो गए हैं, तो उनको मोहब्बत से वापस लाने का काम होना चाहिए। मैं इन्हीं बातों के साथ अपनी बात समाप्त करता हूँ, बहुत-बहुत धन्यवाद।

1.00 P.M.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Thank you very much. Next speaker is Mr. Sitaram Yechury. Yechuryji, it is one minute to 1 o' clock. You can start now, and resume at 2 o' clock. ...*(Interruptions)*... One minute time is there, I do not want to waste that. ...*(Interruptions)*...

SHRI SITARAM YECHURY: But, Sir, do not start my time now. ...*(Interruptions)*... I will start but start my time at 2 o'clock! ...*(Interruptions)*... You have already started my time.

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF MINORITY AFFAIRS AND THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI MUKHTAR ABBAS NAQVI): Sitaram Yechuryji is a very senior leader. ...*(Interruptions)*... It will be better if he starts at 2 o' clock after lunch.

SHRI SITARAM YECHURY: Sir, we will have the lunch break, and after that I will start my speech. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: That is okay. ...*(Interruptions)*...

SHRI MUKHTAR ABBAS NAQVI: Sir, one minute before lunch?

...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: How much each minute of Parliament Session costs, you must know. ...*(Interruptions)*...

श्री मुख्तार अब्बास नक़वी: सर, वैसे ही टाइम हो गया।

SHRI SITARAM YECHURY: Will you allow me to speak now and ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no; you start your speech at 2.00 p.m. The House is adjourned till 2.00 p.m.

The House then adjourned for lunch at one of the clock.

The House reassembled after lunch at two of the clock,

MR. DEPUTY CHAIRMAN *in the Chair*